Chap-3

तृतीय अध्याय

"कस्तूरी कुण्डल बसै"

का विश्लेषणात्मक अध्ययन

तृतीय अध्याय

"कस्तूरी कुण्डल बसै" का विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रास्ताविक : पूर्ववर्ती अध्यायों में उपन्यास विषयक विभावना, हिन्दी का औपन्यासिक विकास, आत्मकथा परिभाषा और विभावना आत्मकथा की विकास यात्रा, समकालीन आत्मकथाओं का संक्षिप्त विवरण जैसे कतिपय मुद्दों की पड़ताल हो चुकी है । हमारे शोध प्रबंध का संबंध बहुचर्चित एवम् लब्ध प्रतिष्ठित समकालीन हिन्दी लेखिका मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथाओं तथा उनके उपन्यासों से सम्बद्ध है । उनकी आत्मकथाओं और उनके उपन्यासों में जो अंतर्संबंध है उन्हें विश्लेषित करना हमारा लक्ष्य है । अतः प्रस्तुत अध्याय में हमने उनकी आत्मकथाओं में से प्रथम आत्मकथा "कस्तूरी कुण्ड़ल बसै" की विस्तृत विवेचना एवम् विश्लेषण का उपक्रम रखा है । आत्मकथा अपने आप में एक मुकम्मल दर्पण है । यह दर्पण व्यक्तिविशेष अर्थात् उसके लेखक या लेखिका का तो होता ही है परंतु साथ ही वह दर्पण उस युग और समाज का भी होता है । इसे एक सुखद संयोग ही समझना चाहिए कि इधर पिछले दो दशकों में साहित्य का यह सर्वाधिक उपेक्षित रूप अपनी तमाम शक्तियों के साथ उभरकर आया है । यह अकारण नहीं है । धर्म, शास्त्र परंपराओं और सामाजिक रूढ़ियों के नाम पर हमारे यहाँ पिछले हजारों वर्षो से स्त्रियों और दलितों का दोहन, शोषण और उत्पीड़न होता रहा है । यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि जिस वर्ग को जितना ज्यादा दबाया या सताया जाता है समय आने पर वह उतनी ही शक्ति और गति के साथ प्रतिक्रियायित होता है । पिछले दो दशकों में सबसे ज्यादा आत्मकथायें हमें इन दों वर्गों से उपलब्ध हुई हैं । यहाँ तक कि इसके कारण यथा स्थितिवादी तबकों में एक बैचेनी और बौखलाहट भी फैल गयी है । अभी तक जब अनेक लेखक स्त्रियों के संदर्भ में लिख रहे थे तब तक इन यथास्थितिवादियों को कोई परेशानी नहीं थी, परंतु अब जब आज भी सुशिक्षित एवम् बहुपठित लेखिकाएँ स्वयं अपना पक्ष रखने के लिए तत्पर हुई हैं तब उक्त वर्ग के लोगों की पेशानियों पर बल पड़ने लगे हैं । यहाँ तक कि वे गाली-गलोच पर भी उतर आए है । ठीक यही बात दलित-लेखकों के संदर्भ में भी लागू होती है । कविता, कहानी, उपन्यास जैसी विधाओं मे तो कल्पना का भी एक आवरण रहता है, जबकि आत्मकथा में (ईमानदार आत्मकथा) तो सब

"जस का तस" धर देना है । यह अनुकूलित वातावरण में समझौतावादी दृष्टिकोण से लिखा गया "सुष्ठु सुष्ठु" प्रकार का साहित्य नहीं है । यहाँ तो सच कहने और लिखने की हिंमत चाहिए, साहस चाहिए । कई जोखिम भरे निर्णय यहाँ लेखक या लेखिका को लेने पड़ते हैं । उसे समाज और परिवार से संघर्ष करना पड़ सकता है और उनसे उच्छेदित होने का हौंसला और साहस भी रखना पड़ता है । कोई कोर्ट कचहरी में भी जा सकता है । मुकदमों से लड़ने की भी पूरी तैयारी रखनी पड़ती है । आत्मकथा लिखना सहज-सरल नहीं है । यह पावक ज्वाला से गुजरना है । ऐसे में मैत्रेयी पुष्पा ने एक नही बल्कि दों आत्मकथाओं को लिखने का अदम्य साहस किया है – "कस्तूरी कुण्ड़ल बसै" और "गुड़िया भीतर गुड़िया" । हमारा लक्ष्य इन आत्मकथाओं के विस्तार में जाने का है, फलतः प्रस्तुत अध्याय को हमने "कस्तूरी कुण्ड़ल बसै" तक सीमित रखा है चतुर्थ अध्याय में हम "गुड़िया भीतर गुड़िया" की चर्चा करेंगे । "कस्तूरी कुंड़ल बसै" में मैत्रेयी पुष्पा की माताजी कस्तूरी के जीवन संघर्ष को रूपायित किया गया है । इस तरह इसे कस्तूरी की दृष्टि से देखा जाय तो यह कस्तूरी की जीवनी है । कस्तूरी के परिवार की द्ररिद्रता, भगोड़े पिता के कारण कस्तूरी की माँ का विधवा सा जीवन, अंग्रेज हाकीमों और जमींदारों का लगान वसूली के लिए जुल्मो-सितम, इनसे निज़ात पाने के लिए कस्तूरी को गाय की तरह बेच देना, पुत्र का कुछेक दिनो का होकर असमय ही कालकवलित हो जाना, मैत्रैयी के जन्म के उपरांत कुछ समय बाद कस्तूरी के पति हीरालाल की मोतीजल्ला की बीमारी से मृत्यु जैसे प्रसंग के प्रारंभ में ही निरूपित हुए हैं । यहाँ से कस्तूरी का संघर्ष शुरु होता है । इस संघर्ष में कस्तूरी के ससुर मेवाराम तथा नंबरदार का सहयोग कस्तूरी को प्राप्त होता है । एक अनपढ़ औरत शिक्षित होती है, सरकारी नौकरी में लगकर न केवल अपने पैरो पर खड़ी होती है बल्कि अनेक समदुखियाँ औरतो को भी आत्म निर्भर करती है । इस प्रकार "कस्तूरी कुंडल बसै" कस्तूरी के संदर्भ में जीवनी (जीवन चरित्र्य - Biography) परंतु प्रारंभिक कुछ पृष्ठों के बाद मैत्रेयी की कथा शुरू हो जाती है । अतः मैत्रेयी के लिए यह आत्मकथा है । प्रस्तुत आत्मकथा में हमें कस्तूरी एवम् मैत्रेयी दोनों का जीवन संघर्ष मिलता हैं । प्रस्तुत आत्मकथा में हमें मैत्रेयी के विवाह और उनके एक पुत्री (नम्रता) होने तक कि कथा उपलब्ध होती है । ऐतिहासिक कालक्रम की दृष्टि से देखा जाय तो इसकी कथा ब्रिटिश शासन के जोरो जुल्म से होते हुए

स्वाधीनता आंदोलन, स्वाधीनता प्राप्ति और स्वाधीनता प्राप्ति के कुछ वर्षो तक चलती है। अंग्रेजी शासन से मुक्ति तथा जमींदारी प्रथा के उन्मूलन के कारण समाज में जो परिवर्तन आए हैं उनको भी लेखिका ने रेखांकित किया है।

कस्तूरी कुण्डल बसै

"कस्तूरी कुण्डल वसै का प्रथम संस्करण सन 2002 में आया था। उसके दूसरे ही वर्ष उसका दूसरा संस्करण भी निकलता है जिससे प्रस्तुत आत्मकथा का महत्व स्वयंमेव बढ़ जाता है। प्रारंभिक संक्षिप्त भूमिका में मैत्रेयी कहती है – "इसे उपन्यास कहूँ या आपबीती?"[1] मैत्रेयीजी के इस प्रश्न से ही प्रस्तुत रचना की शिल्प विधि पर प्रकाश पड़ता है। इससे ज्ञापित होता है कि यह तो आपबीती या आत्मकथा है ही, परंतु उसे उन्होंने लिखा है उपन्यास की तरह जिससे पाठक को उपन्यास पढ़ने का आनंद प्राप्त होता है। जिस प्रकार उपन्यास में प्रतीकों का, बिम्बों का, संकेतों का भी अंलकृत भाषा शैली में प्रयोग होता है, मैत्रेयीजीने इसे उसी तरह ही लिखा है। यदि अपनी तरफ से वह घटस्फोट न करती तो शायद पाठक इसे आत्मकथात्मक प्रकार का उपन्यास ही कहते। मैत्रेयीजी ने इन दोनों आत्मकथाओं के जो शीर्षक रखे हैं और उनके भीतर जो अध्यायों को शीर्षक दिए हैं उनसे भलीभाँति महसूस किया जा सकता है कि मैत्रेयीजी के प्रिय कवि कबीर रहे होंगे। प्रस्तुत आत्मकथा (प्रथम भाग) को उन्होंने 9 अध्यायों में विभक्त किया है जो इस प्रकार है – (1) रे मन जाह जहाँ तोहि भावे (2) उलट पवन कहाँ राखिये (3) जिउ, तरसै तुम मिलन को, मन नाहि विसराम (4) तुम्ह पिंजरा, मैं सुअना तोरा (5) हम घर साजन आए (6) दुल्हनियाँ गाओ री मंगलचार (7) कैसे नीर भरे पनिहारी? (8) पानी में अगन जरे (9) जो घर जारै आपनो ...। इस प्रकार संपूर्ण आत्मकथा (प्रथम भाग) 332 पृष्ठों में उपन्यस्त् हुई है। यहां हमारा उपक्रम प्रथमतः "कस्तूरी कुंडल बसै" के पाठ को प्रस्तुत करना होंगा। जिसमें हम उनके द्वारा दिए गए तथ्यों और घटनाओं को जस का तस रखने की चेष्टा करेंगे जिससे बाद में कस्तुरवादी दृष्टि से उसका सम्यक् विवेचन और विश्लेषण हो सके।

1) रे मन जाह, जहाँ तोहि भावे

जैसा कि पहले निर्दिष्ट किया गया है "कस्तूरी कुंडल बसै" में प्रारंभ में मैत्रेयीजी की माता "कस्तूरी" के जीवन को चित्रित किया गया है । इस प्रथम प्रकरण में कस्तूरी के बचपन से विवाह तक की कथा का आकलन मिलता है । यहाँ कस्तूरी के माता-पिता की दरिद्रता और तज्जन्य उनकी लाचारदर्जी का मर्मस्पर्शी वर्णन हुआ है । कस्तूरी अपनी माता को "चाची" कहती थी । उसके पिता का नाम ज्वालाप्रसाद था । उसके दो भाई थे – नंदनलाल और हेतराम । बड़ा भाई नंदनलाल पीलिया का मरीज था । कस्तूरी ब्राह्मण परिवार के उपाध्याय गोत्र की कलंकनुमा बहन थी । कलंकनुमा इसलिए कि वह ब्याह करना नहीं चाहती थी । उसके पीछे भी कस्तूरी के मन में समाया हुआ जो भय था वह तत्कालीन सती प्रथा को लेकर था । कस्तूरी को कहीं से ज्ञात हो जाता है कि उसकी शादी किसी बूढ़े से होनेवाली है । पति यदि बूढ़ा हो तो उसका पहले मरना भी निश्चित है और तत्कालीन समाज में कुलीन जातियों में पति के पश्चात सती होने की प्रथा थी[2] परंतु फिर भी कस्तूरी को विवाह तो करना ही पड़ता है । विवाह के उपरांत कस्तूरी को ज्ञात होता है कि उसे कुछ रूपयों में बेच दिया गया था । कस्तूरी के पति का नाम हीरालाल है और ससुर मेवाराम है जो कि अपाहिज है । विवाह के तुरंत बाद कस्तूरी को एक लड़का होता है जो कि कुछही दिनों का होकर मर जाता है । उसके बाद मैत्रेयी का जन्म होता है । मैत्रेयी नाम हीरालाल द्वारा दिया गया था । गाँववालों के लिए तो उसका नाम "पुष्पा" ही था । हीरालाल ने कहा था – "यह हमारी बेटी, जब इसका जन्म हुआ, ग्रह-नक्षत्रों ने रास्ता दिया । देवता और रिद्धि-सिद्धि साथ हो लिए पंड़ितजीने यही कहा था? और यही हमने देखा, हमारे घर में अन्न और दूध की सारे गाँव में अमन-चेन ! मैत्रेयी आई है हमारे घर ।[3] मैत्रेयी के जन्म के बाद हीरालाल मोतीजल्ला की बीमारी में तड़प-तड़पकर मर जाता है ।[4] इसी अध्याय में अंग्रेजों के शासन का जिक्र भी हुआ है । गाँव के गरीब किसानों को लगान के लिए अंग्रेजों का जोरो – जुल्म सहन करना पड़ता था । लगान न देने पर कोड़ों से उनके शरीर को छलनी कर दिया जाता था । लगान वसूली के लिए गोरे हाकीमों के आने मात्र से गाँव मे भय का साम्राज्य खड़ा हो जाता था । इस अध्याय में "राधाभाभी का किस्सा" भी वर्णित है । भूख के कारण राधाभाभी एक दिन सास से पहले एक रोटी खा लेती है । सास उसे खाते देख लेती है गले में कौर अटक जाता है और वह

मारे भय के लोटा लेकर खेतो में निकल पड़ती है और रात को घर नहीं आती। दूसरे दिन प्रातः गाँव का धोबी मिलता है जो किसी तरह उसे घर ले आता है। धोबी हाथ जोड़कर कसम खाता है कि राधा उसकी बहन के समान है मगर राधाभाभी पर हरजाई होने का कलंक लग ही जाता है उसकी जबान को गरम चिमटे से दागा जाता है। राधाभाभी महीनों तड़पती रहती है। बोलना बंद हो जाता है और एक दिन उसी पीड़ा में मर जाती है।[5] इसमें यह भी संकेतिक किया गया है कि गाँव में दुष्चरित्रा स्त्रियों की बड़ी दुर्दशा होती थी। उनके सिर को मुड़ाकर और मुँह पर कालिख पोतकर गाँव में घुमाया जाता था। यहाँ लेखिकाने अपनी व्यंग्यात्मक शैली में कहा भी है – "जिन घरों में धन नहीं रहता, आबरू और मर्यादा उतनी ही ज्यादा पैदा करनी होती है।"[6] अध्याय के अंत तक आते-आते समय परिवर्तन की बात भी कही गई है। भारत पराधीनता की बेड़ियों को तोड़कर आज़ाद होता है। अंग्रेजी शासनका जोरों-जुल्म खत्म होता है। ज़मीदारी प्रथा का भी खात्मा हो जाता है। पति के मृत्यु के उपरांत कस्तूरी आगे पढ़ने का फैसला करती है जिसमें गाँव के जमींदार उसका सहयोग करते हैं। वैसे बचपन में रामश्रीने जमीन पर मात्राओं को जोड़कर अक्षर बनाने का उसे सिखाया था। कस्तूरी में पढ़ने की ललक तभी से थी, जिसकी पूर्ति पति की मृत्यु के उपरांत होती है।

2) उलट पवन कहाँ राखिये

इस अध्याय में चंदना का गीत, मैत्रेयी का शैशव, उसका पढ़ने में ज्यादा ध्यान न लगना, खेरापातिन दादी के साथ तरह-तरह के गीत गाना, एदल्ला-चमार से जुड़ी घटना, कस्तूरी का सरकारी नौकरी में लगना, कस्तूरी के ससुर मेवाराम की मृत्यु, उनकी गाय का बिक जाना, ग्राम सेविका के रूप में कस्तूरी का उभरकर आना, पढ़ाई हेतु मैत्रेयी का अलीगढ़ में रहना, जैसी घटनाओं को आकलित किया गया है।[7] बुंदेलखण्ड में चंदना का गीत एक लौकिक प्रेमकहानी के रुप में प्रचलित है। ब्याहता चंदना सुनार के लड़के के प्रेम में फंस जाती है। पति दोनों को प्रेम की स्थिति में देख लेता है। चंदना की विदाई करवाके उसका पति जब उसे ले जा रहा था तो बीच जंगल में रोककर उससे पूछता है सच क्या है ? मारे डर के चंदना मुकर जाती है, किन्तु कुंवरजी (पति) तलवार से उस प्रेम करनेवाली लड़की का सिर धड़ से अलग कर देते है।[8] मैत्रेयी खेरापातिन दादी से

यह गीत सीखती है और जब तब उसकी कड़ियों को गाती रहती है । कस्तूरी की इस संदर्भ में सोच है कि औरत पुरुष के जंजालमें फंसी ही क्यू? उसे समाज की इस अश्लील गाथा से नफरत है । कस्तूरी चाहती है कि मैत्रेयी ध्यान लगाकर पढ़े । परंतु मैत्रेयी का ध्यान पढ़ाई में कम खेरापातिन दादी के गीतों में ज्यादा होता है । एदल्ला चमार का लड़का है परंतु अपने पीछे वह "सिंह" लिखता था । अतः ऊँची जाति के लड़के एदल्ला को मारते पीटते हैं । मैत्रेयी की एदल्ला से दोस्ती थी । वह उसके प्रति सहानुभूति रखती है । आगे की पढ़ाई के लिए कस्तूरी मैत्रेयी को उसकी संयोजिका के घर रखती है । वहाँ पर संयोजिका के घर के जवान लड़के मैत्रेयी को परेशान करते हैं । मैत्रेयी कस्तूरी को जब बताती है तो कस्तूरी एक दूसरे घर में उसके रहने की व्यवस्था करवा देती है । किन्तु वहाँ भी एक बूढ़ा मिल जाता है जो मैत्रेयी को छेड़ता रहता है । इस संदर्भ में कस्तूरी मैत्रेयी से कहती है – "ऐसे भागने से तेरा क्या बनेगा? कोई बुरी नजर न डाले, इस लिए ही मैंने तेरे बाल काट दिए थे । कान, नाक के छेद मूँदने को कहा था, जेवर भी आदमी की बुरी निगाह को न्योता देते है । सामना करना सीखना होगा, ऐसे ही जैसे हम विधवा औरतें किया करती हैं । यह बात गाँठ में बाँध ले कि मर्द की जात से होशियार होकर चलना होता है, भले ही वह साठ साल का बूढ़ा हो ।"[9] गाँव की औरतें ऐसे बूढों का पर्दा करती है । मैत्रेयी इस बात को लेकर चिढ़ती है और वह सोचती है कि ऐसे बूढ़ों का आदर करने का रिवाज़ क्यो है? जवानों से ज्यादा दोष तो बूढ़ों में होता है क्योंकि वे बूढ़ें हैं । नहीं तो यह बूढ़ा संयोजिका के लड़के से भी बदतर क्यों हुआ । इन दिनों में कस्तूरी अलग-अलग गाँवो में ग्रामसेविका के रूप में काम करती है । अतः उसकी ये मजबूरी है कि वह अपनी बेटी को पढ़ाने के लिए दूसरों के घर में रखती है ।

3) जिउ तरसै तुम मिलन को, मन नाहि विसराम :

प्रस्तुत अध्याय में कस्तूरी के जीवन संघर्ष को यथार्थतः निरूपित किया गया है । यहाँ पर कस्तूरी और मैत्रेयी के प्रकृतिगत, अंतर को भी बताया गया है । कस्तूरी की विचारधारा Careerist महिलाओं जैसी हैं । वह चाहती है कि मैत्रेयी पढ़ – लिखकर अपने पैरों पर खड़ी हो । दूसरी ओर मैत्रेयी का मन वैवाहिक जीवन के लिए ललकता है । ज्यादातर देखने में आता है कि माताएँ जल्द से जल्द अपनी बेटियों के हाथ पीले कर

देना चाहती हैं। परंतु यहाँ माँ-बेटी के संबधो में हमें एक विपरीत स्थिति के दर्शन होते हैं। कस्तूरी नहीं चाहती कि मैत्रेयी विवाह के बंधनो में बँधे। अतः मैत्रेयी जब दसवीं पास कर लेती है तो कस्तूरी 20 रू. माहवार में महिला विकास विभाग में उसकी नौकरी लगवा देती है।[10] और अगर उन दिनों में उसके मामा न आते तो मैत्रेयी को विकास खण्ड़ मोंठ की ग्रामलक्ष्मी का पुरस्कार भी मिल जाता। झाँसी रिज़न के डायरेक्टर ने भी कहा कि मैत्रेयी बी.ए. पास होते ही भगिनी मंडल झाँसी में अच्छे पद पर नियुक्त हो सकती है।[11] अतःकस्तूरी मैत्रेयी को आगे पढ़ाती है। मोठ कोलेज का एक कटु अनुभव भी यहाँ वर्णीत है। पिता की उम्रका मोंठ कोलेज का प्रिंसिपल मैत्रेयी को अपनी बाँहो में कस लेता है और उसे चुंबन देते हुए उसकी मनुहार करता है। ब्राह्मण की बेटी मैत्रेयी यादवों के घर का पानी पीनेवाली अख्क्ड़ और मजबूत लड़की प्रिंसिपल का मुँह बकोट लेती है। उसके शरीर में अपने दाँत गड़ा लेती है , इस वारदात का चश्मदीद गवाह कालेज का चपरासी भी था। परंतु वह तो प्रिंसिपल का मातहत था। बात मैत्रेयी के आमरण अनसन पर बैठने तक आ गई परतुं प्रिंसिपल की पहुँच बहुत ज्यादा थी। अतः मैत्रेयी रेस्टीकेशन के कगार पर आ गई और ऊपर से लांछन लगा – "गुण्ड़ों के साथ रहनेवाली लडकी गुण्डी"[12] कस्तूरी मैत्रेयी को आदेश देती कि वह प्रिंसिपल की माफी माँग ले। कस्तूरी प्रिंसिपल महोदय के आगे तीरवाचा भरती है कि आगे से ऐसा नहीं होगा। तब मैत्रेयी को बड़ा बुरा लगता है। वह कहती है – "यह स्कूल किसी प्रिंसिपल की बपौती नहीं, मेनेजमेन्ट कमिटी, सुप्रीम कोर्ट नही, अगर यह स्कूल व्यभिचारियों और अन्यायी शिक्षकों का अड्डा है तो यह मेरे योग्य स्कूल नहीं, थूँ है यहाँ की शिक्षा पर"।[13] यहाँ कस्तूरी की carrier women वाली सोच उभरकर आती है। वह सोचती है कि मैत्रेयी किसी भी तरह पढ़-लिखकर आगे बढ़े। यहाँ पर लेखिका ने एक तथ्यकी और संकेत किया है – "कांमाध आदमी जब अपने मकसद में मात खाता है तो व स्त्री के लिए सबसे ज्यादा खूंखार हो जाता है।"[14] प्रस्तुत अध्याय में कस्तूरी और गौरा के समलैंगिक संबंधों का भी सांकेतिक वर्णन है। समाज की कुरीतियों के प्रति कस्तूरी का आक्रोश भी यहाँ उपलब्ध होता है। मैत्रेयी के विवाह से कस्तूरी जब उसके विवाह के बारे में सोचती है तो दहेज का मामला सामने आता है और दहेज देकर विवाह करने के पक्ष में तो स्वयं मैत्रेयी भी नहीं है। पढ़ाई

के सिलसिलें में मैत्रेयी को जो इधर-उधर रहना पड़ता है उसके बुरे अनुभवों का भी यहाँ वर्णन है। कस्तूरी के चरित्र के अंतर्विरोध भी यहाँ सामने आता है। इस अध्याय में मैत्रेयी और नंदकिशोर के प्रेम और आकर्षण का प्रसंग भी आता है। अध्याय में जहाँ एक तरफ आज़ादी के बाद ग्रामीण जीवन में जो बदलाव आए हैं, उसका वर्णन है वहाँ मैत्रेयी की हिन्दी साहित्य में अभिरूचि को भी व्यंजित किया गया है। अध्याय में अनेक स्थानों पर प्रसाद, नीरज आदि की काव्यपंकितयों को भी उद्धृत किया गया है।

4) तुम पिजरा मैं सुअना तोरा

पिछले अध्यायों में हमने देखा कि विवाह को लेकर माँ कस्तूरी और बेटी-मैत्रेयी में काफी मतभेद है। कस्तूरी चाहती है कि मैत्रेयी पढ़े-लिखे आगे बढ़े, इस नयी रोशनी का फायदा उठाए और फिर उसका विवाह कही होना हो तो हो। कस्तूरी विवाह से ज्यादा महत्व (करियर) को देती है। कस्तूरी को समाज से जो कटु अनुभव हुए हैं, उसके कारण उसके भीतर की कोमलता का कूप मानों सूख सा गया है। दूसरी ओर मैत्रेयी में किशोरावस्था या युवावस्था में लड़कियोंको लड़को के लिए जो आकर्षण होता है वह आकर्षण है। अतः मनोवैज्ञानिक दृष्टया हम कह सकते हैं कि मैत्रेयी का व्यवहार एक नोर्मल सहज लड़की जैसा है। उसके भीतर स्त्रीत्व की एक ललक है। मैत्रेयी के मनोभावों को देखकर कस्तूरी उसके लिए अच्छे लड़के भी ढूँढ़ती है। परंतु बिना दान-दहेज या केसर के मैत्रेयी का हाथ थामने कोई सामने आगे नहीं आता और कस्तूरी को यह मंजूर नहीं। वह अपनी लड़की कुएँ में धकेल देना नहीं चाहती। प्रस्तुत अध्याय में हम देखते हैं कि कस्तूरी मैत्रेयी को लेकर बहुत परेशान है। कस्तूरी को यह पसंद नही है कि उसकी बेटी का यह मकसद हो कि अपना ब्याह कराकर बच्चें पैदा करें और उन्हे माँ से नानी बना दें।[15] कस्तूरी के सामने गौरा का भी उदाहरण है जिसने एक पुरुष के मरने पर दूसरे पुरुष के कंधे पर सिर टिकाना मंजूर नहीं किया।[16] कस्तूरी सोचती है कि उसके जमाने में यह ऊजाला होता तो वह अब तक सूरज के आस-पास होती। उसे मैत्रेयी की यह बात पसंद नहीं कि वह रोशनी को घूंघट की परतों से ढ़कना चाहती है। मैत्रेयी को लेकर वह उधेडबुन में थी कि अचानक उसका ध्यान कथा सरितसागर की एक कहानी की ओर जाता है। जिसमें राजा अपनी प्रिय, प्रेयसी, पत्नी की मृत्यु के उपरांत दूसरा ब्याह नहीं करना चाहता। तब उसकी प्रेयसी पत्नी सपने में आकर कहती है कि उसकी

मृत्यु के गम में उसे निष्क्रिय नहीं होना चाहिए। उसे जंगल में जाना चाहिए। जंगल में उसे शेर की सवारी गाठनेवाला बालक मिलेगा। जिसे वह अपना वारिस बना सकता है।[17] इस कहानी के कारण कस्तूरी का ध्यान विद्या बीवी की ओर जाता है जो रिश्ते में उसकी ननद होती है। तीन – तीन बेटियों को देकर पति स्वर्ग सिधार गया, पर विद्या बीबी जिम्मेदारी के बोझ को उठाती है और तीनों बेटियों का विवाह करा देती है। दो भानिजों के ब्याह के बाद कस्तूरी तीसरी के ब्याह में नहीं गयी थीं। भात न्यौतने आई बीबी से कहना न चूकी कि 14 वर्ष की लड़की के लिए 44 का आदमी ढूँढ़ लिया तो बड़ा मोर मार लिया। तब विद्या बीबी ने कहा था – "भाभी तेरी जैसी अक्ल हम में कहाँ से आई, बस अपना गुजारा कर रहे हैं। लड़की कुँआरी बिठाए रहें तो हाल मुश्किल जानती है तू? उमर का बड़ा है तो खेती-पाती में भी बड़ा है। साढ़े-तीन सो बीघो का मौरुसीदार है। कोई गोद का लल्लू ढूँढ़ लेती तो लड़की को क्या मिल जाता? रागरंग और दिलजोइयों से जिन्दगी नहीं चलती।"[18]

पर विद्या बीबी कस्तूरी के प्रति अपने मन में कोई मलाल नहीं रखती और अंततः कस्तूरी की समस्या उसके द्वारा ही सुलझती है। विद्या बीबी के मझले दामाद ने अपनी आठवीं पास बहन के लिए एक डॉक्टर लड़का ढूँढ़ा था। बात लगभग तय थी पर पढ़ाई को लेकर टूट गई। डॉक्टर को पढ़ी-लिखी शिक्षित लड़की चाहिए थी। अतः विद्या बीबी को अपनी भाभी कस्तूरी का ध्यान आता है। और वह कस्तूरी जब हसनगढ़ जाकर विद्या बीबी को मिलती है, तब अति उत्साह में विद्या बीबी से कहती है – "लो तुम न आती तो हम आ ही रहे थे। हमने सुनी है कि "कनास बापों" ने तुम्हें बड़ा सताया है। धुआँकारों ने ऐलकारनी का हौप ना माना। राँड लुगाई की तरह फजिहात पर उतर आए। लोभी लालची रुपया पइसा तो माँग ही रहे है, इसकूटर के संग छोरी के भईया-बाप माँग रहें है। बताओ, लुगाई हाथ-पाँव से मेहनत करे और भगवान से लड़कर खसम-पूत भी लाए, तब से ब्याह शादी के लिए राजी होंगे। रंधे की मरदों की दुनिया ! आज मेरा हीरा भइया होता तो....."[19]

कस्तूरी भले ही विद्या बीबी को अनपढ़, गँवार समझती हो परंतु विद्या बीबी अपनी महिला मंगल में अधिकारी के पद पर काम करती हुई भाभी को लेकर गौरव का अनुभव

करती है। यथा – "सो तो तेरे नाम की इलाके में "हई" पड़ गई है। कस्तूरी नाम सुनते ही बंजमारे मर्दो का हौंसला हिल जाता है। मेरी छाती चौड़ी हो जाती है, भोजाई का नाम सन्नाम हो रहा है"[20] अतः दूसरे दिन भाभी-नंनद अलीगढ़ चल देते हैं। वहाँ पहुँचकर कस्तूरी को ज्ञात होता है कि डॉक्टर सिनेमा देखने गये हैं। इस बात को लेकर फिर वह विदक जाती है क्योंकि कस्तूरी को सिनेमा देखनेवाले लोग अच्छे नहीं लगते थे। उसकी सोच थी कि सिनेमा चरित्र का नाश कर देती है।[21]

यहाँ भी विद्या बीबी की व्यवहार बुद्धि काम आती है। वह कस्तूरी को समझाती है – "अरी सिलैमा क्या रंडी का कोठा है? हमारे तीनों दामाद सिलेमा के सोखीन हैं तो क्या उन्हें बदचलन मान लूँ? बावरी न कुछ बात पर लड़का खारीज कर रही है ! फिर तो तैने कर लिया छोरी का ब्याह।"[22] दूसरे दिन जब दोनों डॉक्टर से मिलती है तो डोक्टर के व्यवहार, विनम्रता के सामने कस्तूरी गदगद् हो उठती है। अततः उसे "शेर की सवारी गाँठने वाला युवक"मिल ही जाता है। कस्तूरी को डॉक्टर की ये बात अच्छी लगती हैं कि वह बिना लाग लपेट के पिता की बात आने पर कह देता है कि, उनके पास जाने की जरूरत नहीं है शादी मुझे करनी है। मेरे मुँह से निकला तो हुआ। डॉक्टर की इस बात पर कस्तूरी को "शाबाश" कहने का मन हुआ। अध्याय में यह भी आया है कि डॉक्टर से पहले अढू के नगला वाले इंजीनियर अयोध्याप्रसाद से जो बात चल रही थी। वह भी कुछ नाननुच के साथ तैयारी बताते है। परंतु कस्तूरी के दिलो दिमाग पर तो डॉक्टर छाया हुआ है। अतः अंततोगत्वा उन्हीं से सगाई की बात तय होती है। अढू के नगलावालों के कारण पंड़ितजीने कई मीन-मेख निकाले थे। गुण दोष मिलाए नही मिले। नाड़ियों का मिलान किया, नहीं हुआ। पर कस्तूरी तो निराली है। वह कहती है कि उसे पत्रा पंचाग पर रत्तीभर विश्वास नहीं है। सिंकुरा गाँव के नंबरदार भी कस्तूरी के सूर में सूर मिलाते है - करमगति टारे नाहि टरी। मुनि वसिष्ठ से पंड़ित ज्ञानी सोधि के लगन धरी / सीता हरण दसिरथ को, वन में विपत्ति परी।"[23]

5) हम घर साजन आए

यह समूचा अध्याय पूर्वदीप्ति शैली में लिखा गया है। पूर्ववर्ती अध्याय में निंदिष्ट किया गया है कि कस्तूरीजी को अपनी बेटी मैत्रेयी के लिए ऐसा पढ़ा-लिखा शिक्षित

समझदार दामाद मिल गया है जो केवल लड़की की शिक्षा को देखकर बिना दान-दहेज के शादी करने के लिए उद्यत है। पिछले अध्याय के अंत में सिर्कुरा गाँव में मैत्रेयी के लिए दो – दो बारातों के आने का जिक्र हुआ है।[24] डॉक्टर के साथ तय होने के पश्चात अढू के नगलावाले इंजीनियर अयोध्या प्रसाद भी बिना दान-दहेज विवाह के लिए तैयार हो जाते है। परंतु अंततः मैत्रेयी का विवाह अलीगढ़ के डॉक्टर साहब से ही होता है। अतः हम देख सकते है कि प्रस्तुत अध्याय की तमाम घटनाएँ पूर्वदीप्ति के माध्यम से विवाह पूर्व की है। वैसे आत्मकथा में घटनाओं तारीखों की क्रमिक्रता का ध्यान रखा जाता है परंतु यहाँ मैत्रेयीजी ने आत्मकथा और उपन्यास के शिल्प को मिला दिया है।

अध्याय का प्रारंभ डॉक्टर के तार से होता है कि वह झाँसी आ रहा है। मैत्रेयी ने अपने पत्र में अपने निवास स्थान का जो वर्णन किया था उसके कारण डॉकटर वहाँ आने की इच्छा जाहिर करते हैं। तार के आते ही गाँव में आंतक सा छा जाता है। क्योंकि गाँव में तार हंमेशा दुःखद घटनाओं के ही आते रहते हैं। कोई शुभ या अच्छी घटना का तार आए उसकी तो गाँववालों को कल्पना तक नहीं होती। यूँ देखा जाए तो यह खुशी का तार है। परंतु मैत्रेयी अब सकपका जाती है कि ऐसे स्थान पर डॉक्टर को कहाँ ठहराया जाएगा। मैत्रेयी जिस बाई के यहाँ रहती थी वह स्थान बड़ा गंदा था। आस-पास काछी, मेहतर आदि निम्न वर्ग के लोग रहते थे और उसके कमरे में पाखाने और गुसल खाना की व्यवस्था भी नहीं थी। इससे पूर्व मैत्रेयी जहाँ रहती थी, वह स्थान जदुनाथ के बाड़ें में था और उसमें सभी प्रकार की सुविधाएँ भी थी। लोग भी उच्च-मध्य वर्ग के थे, परंतु मैत्रेयी ने "जदुनाथ के बाड़े की औरतों" को लेकर जो कविता लिखी वह "दैनिक जागृति" के रविवारीय संस्करण में प्रकाशित हुई थी। उसमें मैत्रेयी ने बाड़े की औरतों के दुर्गुणों का पर्दाफाश किया था। कविता के प्रकाशन से जहाँ मैत्रेयी को प्रसन्नता हुई वहाँ उसके बाद मचे हुए बबाल के कारण उसे काफी दुःख भी हुआ। उसे अपनी इस काव्य-लेखन के कारण ही जदुनाथ के बाड़े को छोड़ना पड़ा।[25]

मैत्रेयी जिस स्थान पर रहती है उसका वर्णन प्रस्तुत अध्याय में है और उसके साथ ही उससे जुड़ी हुई कई कहानियाँ है। रधुवीरकाछी उर्फ पोलेबाबा, उसकी बेटी नन्हीं, पोलेबाबा की पत्नी की तपेदिक की बीमारी जिसके इलाज में उन्हें अपनी जमींन भी

बेच देनी पड़ी फिर भी पत्नी को बचा नहीं पाये। पत्नी के बाद नन्हीं भी तपेदिक की शिकार हुई और उसीमें परलोक सिधार गई। इस घटना के कारण पोलेबाबा विक्षिप्त से हो गए। यहाँ पर लेखिका ने निम्न तबकें के लोगों की गरीबी और इस गरीबी से जुड़े व्यसनों की भी बात की है कि गरीबी और व्यसन का चोली दामन का साथ होता है।[26]

डॉक्टर के लिए खाना बनाने की समस्या के संदर्भ में सल्लो का किस्सा आता है। सल्लो का आदमी रामशरण यादव बस में क्लीनरी करता है, पर नंबरी छटा हुआ और उचक्का व्यक्ति है। कुछ दिन पहले उसने गाँव की एक लड़की को बहेला-फुसलाकर मेला दिखलाने ले जाता है। रात को लड़की घर नहीं पहुँची तो गाँव में बात आग की तरह फैल जाती है। दूसरे दिन जब वह घर पहुँचती है तब उसके भाई और बाप उसको दो टुकड़े में काट देते है। यहाँ लेखिका ने बुंदेलखण्ड़ के गाँव में खाप-पंचायतों की बर्बता का भी जिक्र किया है।[27] इस घटना के बाद रामसरण का भी दिमाग सनक जाता है। और जब तब चोरी उचेक्की और लफंगाइगीरी का काम करता है। तब आए दिन पुलिस उसे पकड़ कर ले जाती है। सल्लो का काम है किसी तरह उसे छुड़ा लाना। एक बार तो वह अपनी हँसुली बेचकर उसे छुड़ा लाती है। सल्लो को उसके आदमी के दूसरी औरतों से जो संबंध है उससे कोई लेना-देना नहीं है वह कहती है – "राजा की रानी एक, बांदी हजार"[28] यहाँ मैत्रेयी ने यह भी सांकेतिक किया है कि ग्रामीण, संघर्षशील महिलाएँ अपने पति के ऐसे संबंधो को लेकर निर्दन्द्र सी होती है।

प्रस्तुत अध्याय में राजकुमारीराय, अमरजीत कौर, निशिखरे आदि मैत्रेयी के साथ कोलेज में पढ़नेवाली लड़कियों की कहानी भी है। इसी अध्याय में नंदकिशोर से मैत्रेयी की प्रथम मुलाकात का प्रसंग भी है। कोलेज की अन्य लड़कियाँ मैत्रेयी को गँवई (गाँव) समझकर उसकी उपेक्षा करती थीं, उसके कारण एक बार मैत्रेयी के कपड़े भी खराब होते है तब अमरजीत कौर दूसरे कपड़े देकर स्त्रीत्व की लाज बचाती है।[29] राजकुमारी राय के पिता फ्रीडम फाइटर रहे है। वह भी अब ताँगें में न जाकर मैत्रेयी के साथ पैदल जाना पसंद करती है। शोभा मांजरेकर के पिता कोग्रेसी नेता थे और विधानसभा में प्रमुख पद पर बिराजमान थे। इसी अध्याय में मैत्रेयी के मित्र मदनमानव का भी उल्लेख है।

मदनमानव एक छात्र नेता है। और उसके साथ मैत्रेयी कोलेज चुनाव के प्रचार में भी भाग लेती है। इसके कारण भी कुछ लोग मैत्रेयी की निंदा करते है। मैत्रैयी के कोलेज के लड़के-लड़कियाँ अंग्रेजी शिक्षक से तो आंतकित रहते है परंतु हिंदी शिक्षक का मखौल उड़ाने से नहीं चूकते।[30]

ऊपर जिस राजकुमारीराय का उल्लेख है उसके पिता डी.ओ. है। वे लोग एक किराये के मकान में रहते है ऐन परीक्षा के वक्त मकान मालिक मकान खाली करवाने के तकादे करता है तब मैत्रेयी राजकुमारी के लिए कोर्ट के दरवाजे खट-खटाती है परंतु अपनी कुछ अध्यक्षता के कारण वे कोर्ट में हार जाते है।[31] इस प्रसंग की चर्चा इस संदर्भ में आती है कि राजकुमारी के लिए लड़नेवाली मैत्रेयी जदुनाथ के बाड़ेवालों के खिलाफ भी लड़ सकती थी परंतु माताजी (कस्तूरी) का विचार कर के वह मौन साध लेती है। यहाँ पर लेखिकाने यह भी स्पष्ट किया है कि उच्च शिक्षा का अर्थ केवल पढ़ाई मात्र नहीं होता, उससे व्यक्ति में स्वतंत्ररुप से सोचने समझने की शक्ति का भी विकास होना चाहिए।[32]

अध्याय में आलमआरा का प्रसंग भी है। बुर्का छोड़ने पर आलमआरा को बेइज्जत किया जाता है, इतना ही नहीं उसे कोलेज छोड़कर घर पर बैठना पड़ता है। इन सबके पीछे उन लोगों का भी हाथ है जो अपने को शिक्षित समझते हैं। इस प्रकार मैत्रेयी ने शिक्षित लोगों के भी दोगलेपन को भी आड़े हाथों लिया है।[33]

निशिखरे की आत्महत्या का प्रसंग भी इस अध्याय की एक मुख्य घटना है। निशिखरे का विवाह जबरदस्ती एक दुहाजू व्यक्ति के साथ तय कर दिया जाता है। निशिखरे इस विवाह का विरोध करती है, परंतु घर परिवारवालों के आगे उसकी एक नहीं चलती और वह आत्महत्या कर लेती है।[34]

प्रस्तुत अध्याय में यह भी बताया है कि मैत्रेयी का जन्म उल्टा हुआ था। ऐसी मान्यता है कि उल्टे जन्मने वाले बच्चे कुछ हटकर होते हैं। उनमें सघर्षशीलता का माद्दा पाया जाता है। मैत्रेयी में भी ये गुण हमें दिखते हैं। वह छात्रसंध के चुनाव में योगदान

देती है और फलतः संस्कृत अेसोशिएशन की सेक्रेटरी भी बनती है ।[35] यथास्थितिवादी लोगोंकी सोच यह है कि लड़कियों को राजनीति से दूर रहना चाहिए, परंतु "वरूण के बेटे" (नागार्जुन) की नायिका की भाँति मैत्रेयी भी मानती है कि लड़कियों को या औरतों को राजनीति से परहेज नहीं करना चाहिए ।

मैत्रेयी चीमनसिंह यादव के यहाँ पली-बड़ी है, उनके बेटे युवराज और रतनसिंह को मैत्रेयी अपने भाई मानती है और वह भी उनको "दीदी" का दर्जा देते हैं । इनके संदर्भ में बाल-विवाह का प्रसंग भी आया है । यहाँ एक दिलचस्प तथ्य की ओर मैत्रेयी ने इशारा किया है विवाह के समय पहनाये जाने वाले "पाग" के रंग से भी जाति-भेद को चिन्हित किया जाता है । जैसे – "पीला बागा अपने यहाँ (यादवों में) पहना जाता है । लाल पहनोंगे तो लोग कहेंगे, चमार दुल्हा आ रहा है । सफेद पहेनोगे तो कहेंगें भैतर बसोर का दुल्हा आ रहा है । पीला पहनों, अहीरों के लला लगो ।"[36]

इस अध्याय की अंत्यंत महत्वपूर्ण और त्रासद घटना है शकुन की कथा-व्यथा । शकुन मैत्रेयी के गाँव खिल्ली के पुजारी की लड़की है । उसका पति प्रभुदयाल एक दुर्घटना में लंगड़ा हो जाता है । प्रभुदयाल के मालिक बसवाले लोग हैं । अतः मालिक लोग तथा उनसे जुड़े ड्राईवर, कडंक्टर आदि शकुन के यहाँ लड़कियाँ लेकर आते है । प्रभुदयाल का खर्चा वहाँ से चलता है । इस प्रकार "जिस्मफरोशी" की चर्चा भी आती है । वस्तुतः इन लड़कियों के साथ वास्तव में बलात्कार होते हैं । कई बार एक स्त्री को तीन-चार पुरूष झेलने पड़ते हैं तब शकुन के कमरे से चीखों की आवाज भी सुनाई पड़ती है । लेखिकाने संकेतिक किया है कि शकुन को भी शायद जिस्म फरोशी से गुजरना पड़ा हो । जिस्मफरोशी का एक काला चेहरा इस रूप में भी उभरकर आया है कि कुछ लोग तरक्की पाने के लिए अपनी पत्नी तक का भी इस्तेमाल करते हैं ।[37] शकुन का यह प्रसंग मैत्रेयी डॉक्टर के निवास के लिए जो व्यवस्था तलासती है उस संदर्भ में आया है । शकुन पहले तो मैत्रेयी को कमरा देने के लिए कह रही थी परंतु बाद में उसे अपनी बात से मुकरना पड़ता है । क्योंकि उस दिन मालिक लोग आने वाले थे । शकुन इसे बर्दाश्त नहीं कर पाती और भाग जाती है । शकुन को भगाने का आरोप भी मैत्रेयी पर आता है । इस

घटना की एक विड़म्बनापूर्ण पक्ष यह भी है कि शकुन के भाग जाने से उसका पति प्रभुदयाल स्वयं को असुरक्षित समझता हैं कि इसको लेकर मालिक लोग पुलिस की सहायता से उसकी खूब पिटाई करवायेंगे। अतः मैत्रेयी प्रभुदयाल को खिल्ली पहुँचने में भी सहायता करती है और डॉक्टर को टेलिग्राम दे देती है कि वह अपने आने के कार्यक्रम को स्थगित कर दें।

इस प्रकार समूचा अध्याय पूर्वदीप्ति में है और उसमें डॉक्टर के लिए समुचित निवास तलाशने के संदर्भ में बहुत सी प्रासंगिक कथायें आई हैं। जिनमें निशिखरे, सल्लो, शकुन और पोले बाबा की त्रासदी प्रमुख है।

6) <u>दुल्हनियाँ गाओ री मंगलाचार</u>

प्रस्तुत अध्याय पृष्ठ 208 से लेकर 241 तक में 33 पृष्ठों में उपन्यस्त् हुआ है। इसमें मैत्रेयी और डॉक्टर के विवाह के प्रसंग को इस तरह यथार्थ शैली में उकेरा गया है कि ग्रामीण संस्कृति के विभिन्न स्तर उभरकर आए हैं। ग्रामीण संस्कृति में सामुहिकता की भावना, जन्म, मरण, विवाह जैसे प्रसंगों को वैयक्तिक या पारिवारिक न मानते हुए उसको समूचे गाँव का मानने की स्पष्ट भावना - गाँव की इज्जत आबरू के लिए लड़ने – मरने का माद्दा, लोगों के विश्वास, अंधविश्वास, मान्यताएँ कई सकारात्मक चीजों के साथ कुछ ऋणात्मक चीजों का भी समावेश जैसे जातिवाद की कट्टरता, जातिवाद को ही धर्म समझना, छूत-अछूत की भावना, रीति-रीवाज और रुढ़ियों के पालन में कट्टरता का निर्वाह यहाँ यथार्थतः श्रृतिगोचर हुआ है। "श्रृतिगोचर" शब्द का प्रयोग मैने साभिप्राय किया है क्योंकि मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों, कहानियों और आत्मकथाओं में हम घटनाओं को देखते ही नहीं है, बल्कि उनको सुनते भी हैं।

कहते हैं मैत्रेयी का जन्म ऊल्टा हुआ था। और ऐसे व्यक्ति के जीवन में अनेक प्रकार की बाधाएँ आती है। मैत्रेयी के विवाह में भी एक के बाद एक ऐसी अड़चनें आती हैं कि वह पुरानी कहावत स्मृति में क्रोंध जाती है – "कानी के ब्याह में सौ जोखो की बात"। यहाँ मैत्रेयी की तुलना कानी लड़की से करने की हमारी मनसा कतई नही है, परतुं कस्तूरी और मैत्रेयी दोनों अलग ऊर्जा की बनी हुई है। कस्तूरी महिला मंगल योजना में

अधिकारी है और रीतिरिवाजों और रूढियों को नकारती है । दूसरी तरफ मैत्रेयी में माँ जैसी कट्टरता तो नहीं है परंतु वह भी नारी अस्मिता को लेकर सचेत है । लड़की और गायवाली कहावत को दोनो माँ-बेटी नकारती हैं, वहाँ विवाह में अड़चनें ना आवे तो ही आश्चर्य हो सकता है ।

भगवानदास बनिया चाहता है कि कस्तूरी यह ब्याह शहर से करे क्योंकि उसमें उसकी बनिया बुद्धि अपना फायदा देखती है । परंतु कस्तूरी टस से मस नहीं होती । वह शादी अपने गाँव सिर्कुरा से ही करना चाहती है । मैत्रेयी के विवाह में पहली बाधा तो प्रकृति की ओर से ही आती है । दिसम्बर के महीने में बेमौसम बारिश सबको चिंतित कर देती है । पक्की सड़क से गाँव तक आनेवाली कच्ची सड़क से बारात कैसे आएगी यह भी एक समस्या है । परंतु गाँव के लोग मिलकर सड़क को दुरूस्त करने के काम में लग जाते हैं जिसमें यह बारिश एक बाधा उपस्थित करती है । अंधविश्वासों में नहीं माननेवाली कस्तूरी भी एक बार तो सोचती है कि कही मैत्रेयीने कढ़ईया तो नहीं चाटी होगी?[38]

उसके बाद दूसरी बाधा आती है विद्या बुआ और नारायणीमामी को लेकर । कस्तूरी के भाई – भाभी ने भात में कोताही की है । मैत्रेयी की नानी मरते समय पैसे दे गयी थी फिर भी इन लोगो ने भात पहनाने में अपनी नीचता का परिचय दिया था । विद्या बुआ ने ही मैत्रेयी के लिए डॉक्टर वर ढूँढा था । अतः उनका पउवा भारी था । इस वाक्युद्ध में कलावती चाची और लौंगसीरी भी जुड़ती है । कस्तूरी का भतीजा देवकिशोर कलावतीचाची के लिए कुछ जातिसूचक अपमानवाची शब्द का प्रयोग करता है, जिसे लेकर गाँव के लोग विशेषतः जाट मरने मारने पर उतारू हो आते हैं । मौके की नज़ाकत को देखते हुए देवकिशोर को छिपा दिया जाता है और नंबरदार सबको समझाने की चेष्टा करते हैं ।[39]

तीसरी अड़चन कस्तूरी के व्यवहार के कारण आती है । विवाह में आई हुई हथलगनी औरतें और रिश्तेदारिनें कामे में तो हाथ बटाती नहीं हैं । अतः कस्तूरी हबीबन को बर्तन माँजने का काम सौंपती है, जिसके कारण गाँव का जातिवादी साँप फन उठाकर खड़ा हो जाता है । ब्राह्मण और बनियां स्त्रियों को अपना धर्म जोखिम में पड़ता नजर आता

है। कस्तूरी जातिवादी ऊँचनीच में मानती नहीं है। कस्तूरी स्वयं ब्राह्मण होते हुए भी वह जातिवादी ढ़कोस लों को नकारती है इसे लेकर पूर्वदीप्ति (Flash back) द्वारा मथुरा ट्रेनिंग सेंटर के प्रसंग को लेखिका ने चित्रित किया है, जिसमें कस्तूरी कमेटी के सदस्यों के आगे भी झुकती नहीं है और अपनी सही बात को मनवाती है।[40] परंतु जो कस्तूरी अपनी सिद्धांतवादिता के कारण बड़े-बड़े हाकिमों को झुकाती है वह यहाँ इन गँवई, अनपढ़, मूढ़मती लोगों के आगे बकरी बन जाती है। ऐसा कहा जाता है कि जिसे कोई न पहुँचे उसका पेट (अर्थात् संतान) पहुँचता है। यहाँ कहीं नहीं झुकनेवाली कस्तूरी को अपनी बेटी मैत्रेयी के विवाह के लिए अनचाहे समझौते करने पड़ते है।

नंबरदार की तरह चीमनसिंह यादव भी एक उदारमना और उदात्तचेता व्यक्ति है। मैत्रेयी चीमनसिंह के यहाँ बेटी की तरह रही है। चीमनसिंह के बेटे युवराज और रतनसिंह मैत्रेयी को अपनी "दीदी" ही मानते हैं। इस नाते चीमनसिंह यादव सबको जो भव्य तरीके से भात पहनाते हैं उससे सब आश्चर्यचकित रह जाते है।[41]

चौथी अड़चन भी स्वयं कस्तूरी के द्वारा आती है। यह तो सभी जानते है कि डॉक्टर ने बिना देहज के मैत्रेयी का रिश्ता स्वीकार किया था। परंतु बारात में आए वरपक्ष के संबधियों को मिलनी में कुछ न कुछ देने की परम्परा है। मैत्रेयी के लिए गाँववालों के लिए या चीमनसिंह यादव के लिए यह कोई बड़ी बात नहीं थी। परंतु सिद्धांतवादी कस्तूरी उसमें अड़ंगा लगाती है कि दहेज के रुप में वह एक राती पाई भी न देगी। सभी कस्तूरी को समझाने की चेष्टा करते हैं परंतु सभी इसमें असफल रहते है। अबतक दबती आयी कस्तूरी के आंतरिक भाव मानों उछाल मारते है। अंततः विवाह के पहले डॉक्टर आमने सामने बैठते है। गाँववालों के लिए तो यह दृश्य भी बड़ा अजूबा होता है क्योंकि विवाह संस्कारों के पहले वर वधू मिलते नहीं है।[42] मैत्रेयी छोटा सा पत्र लिखकर डॉक्टर के हाथ में थमा देती है। फलतः यह समस्या भी सुलझ जाती है। और सिर्कुरा गाँव में ये एक अनोखा और अनोता ब्याह संपन्न होता है।

अध्याय में खेरापतिनदादी, कलावती, लौंग सिंरीबीबी, विद्या बुआ आदि के गाली गीतों का भी बड़ा मनोरंजक वर्णन हैं। ये गालीगीत कहीं-कहीं अश्लीलता की सीमा कों

भी पार करनेवाले होते हैं । कलावती शहरातियाँ के आग्रह पर "ललमनियाँ" नाच भी दिखाती है ।[43] इन गाली गीतों को कहीं-कहीं खेल के गीत भी कहते है । गुजरातमें इनको "फटाणा" कहते हैं ।

7) कैसे नीर भरे पनिहारी

प्रस्तुत अध्याय पृष्ठ 242 से लेकर पृष्ठ 260 (18 कुल पृष्ठों में) उपन्यस्त् हुआ है । अनेक बाधाओं और अड़चनों के बावजूद मैत्रेयी का विवाह होता है । प्रस्तुत अध्याय में मैत्रेयी के ससुराल में बिताये कुछ दिनों का वर्णन है । बिदा के समय कस्तूरी मैत्रेयी से जो कुछ कहती है वह बहुत कुछ सूचक है । पारंपारिक और रूढ़ीगत मान्यताओं में बँधी हुयी माँए अपनी बेटियों को जो शिक्षावचन देती हैं ऐसा यहाँ कुछ नहीं है । यथा – "लाली, ब्याह हो गया, पर तु नासमझ औरतों की तरह व्यवहार मत करना, पाँव, फाँव मत पूजना, किसी की भी सुन ले कि "रोटी छुआई की रस्म, रस्म नहीं, तुझे चूल्हे-चौके से बाँधने का महूरत निकलेगा । साफ मना कर देना । तेरी कुछ किताबे मैंने अटैची में रखी थी, अटैची टूट गई । रेशमी साड़ियों का वर्जन साधनेवाली नाजुक अटैची भला किताबों का बोझ सह सकती थीं? मेरी भी मत् मारी गई । ले चाभी, लोहे के बक्से में तेरी किताबें हैं । बस, मेरी तो माँ के नाते इतनी ही कहावत है कि सिंगार-पंटार में मत लगी रहना । तूझे बड़ा शौक है बिन्दी – महावर का । अलीगढ़ युनिवसिर्टी जाना । देखना की पी-एच.डी. की बात बनेगी या नही?"[44] इससे ज्ञापित होता है कि कस्तूरी की सोच प्रगतिवादी नारी की सोच है । वह अव्वल तो यह मानती है कि प्रतिभा संपन्न स्त्रियों को अपनी लीक अलग बनानी चाहिए । वैवाहिक जीवन की वह विरोधी नहीं है परंतु वह स्त्री को – पत्नी को पुरूष की अनुगामिनि – नहीं बल्कि सहगामिनी के रूप में स्वीकार करती है । "कैसे नीर भरे पनिहारी" शीर्षक बड़ा सूचक है । अपने दांपत्यजीवन का, जिसके कई-कई सपने मैत्रेयीने बुन रखे हैं, रीतिकाल की नायिकाओं की भाँति बहुत कुछ सोच रखा है उसका प्रारंभ कैसे किया जाए । ससुराल में मैत्रेयी से पहले मैत्रेयी के कालेज जीवन की घटनाएँ पहुँच जाती है । उसमे कल्पनाओं और अफवाओं से रंग भरे जाते हैं । फलतः मैत्रेयी का पति डॉक्टर होते हुए भी शिक्षित होते हुए भी उसे संदेह की दृष्टि से

देखता है। डॉक्टर शिक्षित है पर पुराने संस्कारों ने अभी पीछा नही छोड़ा है। बल्कि यहाँ तो लगता है कि उसकी उच्च शिक्षा ही यहाँ आड़े आ रही है। फलतः शारीरिक संबधो में वह पहल नहीं कर पाता। यहाँ बहुत सांकेतिक ढंग से लेखिका ने विपरीत रति का भी वर्णन किया है।[45] डॉक्टर को विवाह के बाद की इस प्रथम रति क्रीडा में लुत्फ तो आता है, परंतु मैत्रेयी के इस कौशल के कारण वह उसके प्रति और भी शंकाशील हो जाता है। यहाँ मैत्रेयी का खुलापन ही उसका दुश्मन हो जाता है। अभी कुछ वर्षपूर्व "देव डी" नामक फिल्म प्रदर्शित हुई थी जिसमें नायक वर्षो बाद मिली अपनी प्रियतमा के चरित्र को शंका की नजर से देखता है क्योंकि गँवई गाँव में उनके मिलन का समारोह नायिका ही रचती है, जिसके कारण नायक को लगता है कि यह तो कोई "खेली खाई" औरत लगती है। डॉक्टर के मन में भी कुछ इसी प्रकार की प्रतिक्रिया आती है। इसका बड़ा मनोवैज्ञानिक चित्रण लेखिका ने किया है। डॉक्टर दूसरों के ब्याज से मैत्रेयी की साधारण खुबसूरती पर कोड़े बरसाते हैं। खुद को जो कहना है दूसरों के बहाने जड़ते रहते हैं। खोद-खोदकर जानने की चेष्टा करते हैं कि मैत्रेयी के जीवन में पहले और कितने नायक आ चुके हैं। ऐसी मानसिक विकृत सोच के कारण डॉक्टर बीमार भी हो जाते है। विवाह के उपरांत कई बार हनीमून के लिए जाने का प्रोग्राम खारिज हो जाते है। और "लिबउआ" का समय आ जाता है। उससे पहले दोनों में फिर एक बार आकर्षण की स्थिति बनती है। परंतु पीहर जाते समय मैत्रेयी अपने गहनों, अलंकारो के लिए विवाद खड़ा करती है। हाँलाकि कस्तूरी ने ही सख्त हिदायत दे रखी थी कि अपने गहनों, लत्तो पर अपना अधिकार बनाए रखना क्योंकि यहीं स्त्री के काम आता है; परंतु बाद में वही चिट्ठी लिखती है कि अलंकारों के मोह का गँवारुपन व्यवहार वहा ना करें। मैत्रेयी डॉक्टर से उसे शीघ्र ही बुलाने की जो बात करती है वह भी फैल जाती है और उसके कारण भी उसकी काफी फजीहत होती है। इस अध्याय में यह तथ्य सामने आया है कि हम चाहे जितनी शिक्षा की, स्त्री पुरूष बराबरी के दावे करें परंतु जातीयजीवन में स्त्री की सक्रियता को आज भी संदिग्ध दृष्टि से देखा जाता है। इस मधुर मदिर आनंददायक घटना में स्त्री को तो निष्क्रिय पड़े रहकर कटपुतली का ही बोध करना होता है। जो पुरुष अपनी प्रियतमाओं की इन अदाओं पर बलि-बलि जाते हैं, वे ही यहाँ अपनी पत्नी में उस प्रकार के व्यवहारों को देखकर चकित, दिग्भ्रमित एवं शंकित होने लगते हैं।

8) पानी में अगन जरै

"पानी में अगन जरै" पृ. 261 से 290 तक (लगभग 30 पृष्ठों में) उपन्यस्त हुआ है। मैत्रेयी अपने मायके कस्तूरी के पास आ गयी है। उसका विचार था कि डॉक्टर शीघ्र ही उसे बुला लेंगे परंतु छह महीनों के व्यतीत हो जाने पर भी कोई लेने नहीं आता, फलतः मैत्रेयी को चिंता होने लगती है। शिक्षित होने पर भी डॉक्टर के विचार परंपरागत थे कि स्त्री को स्त्री की तरह रखना चाहिए। उसमें लज्जा, सहनशीलता और त्याग जैसे गुण होने चाहिए।[46] दूसरी ओर मैत्रेयी स्त्री पुरूष, पति-पत्नी में बराबरी की भावना पर तवज्जो देती है। अपने पुरूष मित्र मदनमानव से प्रेरित होकर मैत्रेयी डॉक्टर को पत्र लिखती है। जिसका यथेष्ठ प्रभाव डॉक्टर पर पड़ता है और वह मैत्रेयी को लेने आता है। डॉक्टर के आने पर कस्तूरी को प्रसन्नता होती है। एक अरसे से उनके घर में पुरूष की मौजूदगी ही नहीं थी। कस्तूरी का घर यानी कस्तूरी, गौरा, मैत्रेयी या कोई ग्रामलक्ष्मी दूसरे शब्दों में औरतों का अड्डा। डॉक्टर के आने से स्थिति में कुछ बदलाव आता है। कस्तूरी को दामाद के प्रति कुछ लगाव भी होता है। इस लगाव को मैत्रेयी पसंद नहीं करती।[47] इस स्थिति की तुलना कृष्णा सोबती के उपन्यास "मित्रोमरजानी" की "मित्रो" से कर सकते है जिसमें मित्रो दामाद से उसकी माँ की नजदीकियों को संदेह की दृष्टि से देखती है।[48] मनोवैज्ञानिक दृष्टया देखा जाए तो कस्तूरी का अपने दामाद के प्रति जो लगाव है उसे सामान्य (Normal) नहीं कहा जाएगा। उसमें कहीं-न-कहीं दमित वासनाओं का प्रस्फूटन है। हो सकता है कि कस्तूरी को यदि अपने पति का पूरा प्यार और साथ मिला होता, उसके कोई बेटा होता तो शायद उसके व्यवहार में यह असामान्यता (Abnormality) न होती। यहाँ यह लगाव सास-दामाद के वात्सल्य भाव का न होकर स्त्री-पुरूषवाला है। फलतः मैत्रेयी और डॉक्टर के शारीरिक मिलन पर भी कस्तूरी हाय तौबा मचा देती है और मैत्रेयी को जली-कटी बातें सुनाती है।[49] कस्तूरी के स्थान पर कोई दूसरी माँ होती तो न केवल इसके लिए प्रसन्न होती, बल्कि उनके मिलन की व्यवस्था स्वयं कर देती। कस्तूरी का यह जो व्यवहार है, उसकी यह नीरसता और शुष्कता है, मनोवैज्ञानिक शब्दों को यदि प्रयोग करें तो उसकी यह जो Saddiest मनोवृत्ति है। उसके पीछे उसका प्रेम विहीन जीवन ही है। यह मनोवैज्ञानिक सत्य है कि

जिंदगी में जिसने प्रेम पाया हो वही दूसरे को प्रेम करते देख भी सकता है ।[50] एक बहुत पुरानी अंग्रेजी फिल्म "Blue hot Blue cold " का एक दृश्य स्मृति में कौंध रहा है जिसमें एक व्यक्ति जिसे प्रेम नहीं मिला है, वह कामक्रीड़ारत एक युग्म पर पत्थर की बड़ी शिला लुढ़का देता है । बाहार घूमने-फिरने का जो प्रोग्राम बनता है उसमें भी कस्तूरी ताँगे में पहले बैठ जाती है ।[51] डॉक्टर को अपनी सास का यह व्यवहार कुछ अनुचित तो लगता है परंतु वह उनको समझने का प्रयास भी करता है । उनको अपनी माँ की छबि कस्तूरी में नजर आती है । कस्तूरी के विचार से स्त्री को पुरूष से मुक्त होना चाहिए । स्त्री को पुरूष की गुलामी से मुक्त होना हो तो उसे आत्मनिर्भर होना पड़ेगा और स्त्री को चाहिए की पढ़-लिखकर वह आत्मनिर्भर बने । इस प्रकार कस्तूरी के विचार कुछ कुछ नारीवादी लेखिकाओं से प्रतीत होते हैं । तो दूसरी तरफ मैत्रेयी की दृष्टि से स्त्री पुरूष में मैत्री बराबरी होनी चाहिए । इस तरह आज जिसे "नारी विमर्श" कहा जाता है, उसके दर्शन हमें मैत्रेयी में होते हैं । मैत्रेयी चाहती थी कि डॉक्टर के साथ अपने ससुराल जाएँ परंतु माँ की अनिच्छा से नहीं आज्ञा से, और कस्तूरी है कि खुशी - खुशी उसे भेजना नहीं चाहती । फलतः मैत्रेयी को लिए बिना ही डॉक्टर को वापस जाना पड़ता है ।[52] डॉक्टर के जाने के उपरांत मैत्रेयी को अपने पति की याद आती है । ससुराल जाने की उसकी ईच्छा बलवती होती है । इस बीच ज्ञात होता है कि मैत्रेयी गर्भवती हुई है ।[53] यहाँ भी कस्तूरी का व्यवहार कुछ अलग सा है, जहाँ और माँए, इस बात को लेकर प्रसन्न होती है वहाँ कस्तूरी को मैत्रेयी का माँ होना अच्छा नहीं लगता । कस्तूरी के हिसाब से यह मैत्रेयी का गुलाम होना था । जबकि मैत्रेयी उसमें भागीदारी की भावना देख रही थी । अध्याय के अंत में मैत्रेयी पत्र लिखकर डॉक्टर को सूचित करती है ।

जो घर जारै आपनो.....

"कस्तूरी कुंडल बसै" का अंतिम अध्याय (जो घर जारै आपनो.....) लगभग ४० पृष्ठों मे उपन्यस्त् हुआ है । इस आत्मकथा के अधिकांश शीर्षकों को कबीर काव्य से लिया गया है जो की अत्यंत सांकेतिक, सटीक एवम् सूचक है । अध्याय के प्रारंभ में बताया गया है कि कस्तूरी की सुई अब पाव तक आ गयी हैं और फलतः उसे पैरो में

बहुत पीड़ा होती है । कस्तूरी को लखनऊ के अस्पताल में भर्ती करवाया जाता है । गर्भवती होते हुए भी मैत्रेयी माँ की तबियत को देखने जाती है । मैत्रेयी के पति डॉक्टर साहब भी उसमें उसकी सहायता करते हैं । उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री कस्तूरी के विभाग को बंद करवाना चाहते हैं । उनकी सोच स्त्रियों के खिलाफ है । उनका मानना है कि स्त्रियों का क्षेत्र चार दिवाली और घर गृहस्थी है और स्त्रियों के पढ़ने लिखने से युवकों की नौकरी छीन जाती है ।[54] मुख्यमंत्री कोंग्रेंसी हैं पर उनके विचार स्वाधीनता पूर्व के विचारों से बरअक्स विपरीत प्रमाणित होते है । ऐसा लगता है कि स्वाधीनता के बाद हमारे यहाँ सब ऊल्टा-पुलटा ही होता है । स्मृति में पंक्तियाँ कौंध रही है – "पन्द्रह अगस्त उन्नीस सौ सैतालीस" ठीक मध्यबिंदु है हमारे देश के स्वाधीनता के इतिहास का / जहाँ से हमने उलटना सीखा, जहाँ से हमने पलटना सीखा, जहाँ से हमने मुड़ना सीखा सिद्धांतों से / सिद्धांतों की खोल को ओढ़कर[55] ऐसा प्रतीत होता है कि स्वाधीनता के बाद हमारे नेताओं की सोच Anti-reformation हो गई है । मुख्यमंत्री की तुलना में कस्तूरी के विचार अधिक प्रगतिवादी, कहीं कहीं तो नारीवादी से लगते हैं । इस संदर्भ में कस्तूरी प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को भी पत्र लिखती है परंतु उसका कोई प्रत्युत्तर नहीं आता, कस्तूरी को इस बात का भी दुःख है कि देश की प्रधानमंत्री एक स्त्री होते हुए उसके विचार स्त्रियों के पक्ष में नहीं ।[56] कस्तूरी अस्पताल में है । दामाद डॉक्टर साहब भी आ गए हैं । परंतु कस्तूरी का मन बैचेन है क्योंकि उसकी अनुपस्थिति में महिला मंगल योजना को खत्म किया जा सकता है । सरकारी तौर पर फूट डालो और राज करो की नीति भी चल रही थीं । कस्तूरी के आंदोलन को खत्म करने के लिए महिला मंगल की कुछ शिक्षित उच्च वर्गीय महिलाओं को शहर में नोकरियाँ भी दी जा रही थी । अतः शीघ्रातिशीघ्र अस्पताल से निकल जाना कस्तूरी चाहती हैं, बल्कि वह यह भी सोचती है कि उसको अस्पताल में नजर कैद किया गया है । कस्तूरी की चिंताएँ केवल वैयक्तिक न होकर महिला मंगल की उन तमाम औरतों के लिए थीं । गांधीवाद में विश्वास करनेवाली कस्तूरी इतनी विचलित हो जाती है कि अहिंसा के बारे में और धर्म के बारे में कुछ अलग ढ़ंग से सोचने लगती है ।[57] गौरा, वतनदेवी और सोमेश्वरी, सुबोधबाबू आदि लोग कस्तूरी को अंत तक साथ, सहयोग देते है ।

मैत्रेयी एक सतमासी लड़की को जन्म देती है । पुत्री जन्म पर औरतों की जली कटी बातें उसे व्यथित करती हैं । उस समय उसके मन में जो विचार आते हैं उनकी तुलना इधर की दो पुस्तकों से कर सकते हैं ।[58] यह कितनी विडम्बनापूर्ण स्थिति है कि स्त्री को जन्म देने का दोष एक स्त्री पर ही थोपा जाता है । बच्ची के नामकरण संस्कार के समय डॉक्टर समाज के लोगों के ड़र से प्रचलित तमाम ज्ञाति-रिवाजों की पूर्तता करते हैं । परंतु बाहर से यह बताते है कि यह सारा सामान कस्तूरी देवी ने भेजा है । बाद में जब मैत्रेयी को पता चलता है तब उसे पति पर प्यार भी आता है और गुस्सा भी । डॉक्टर को लेकर भी मैत्रेयी में काफी ऊँहा-पोह चलता रहता है ।

अस्पताल से छूटने के बाद कस्तूरी अपने आंदोलन को तेज करना चाहती है । पर सरकार एक षडयंत्र के तहत उसको कुचलने का प्रयत्न करती है । कस्तूरी की थैली में हथगोले रख दिए जाते हैं और उसे आंतकवादी करार देते हुए जेल में ठूँस दिया जाता है । तब डॉक्टर साहब कस्तूरी देवी को छुडाने के लिए जमीन-आसमान भी एक कर देते हैं । नंबरदार, रामावतार और चरनसिंह आदि लखनऊ आकर कस्तूरी देवी को छुड़ाने का प्रयत्न करते हैं । अध्याय के अंत में एक फैंटसी के द्वारा कस्तूरी के वहाँ आने का वर्णन हुआ है । अपनी माँ से अलग विचार रखते हुए भी मैत्रेयी के मन में कस्तूरी के लिए आदरभाव जगता है । मैत्रेयी को लगने लगता है कि माँ की नारीवादी सोच गलत नहीं है । पुत्री-प्रसव पर वह सोचती है कि आगे चलकर यह भी नानी के नक्शेकदमों पर चलेगी । मैत्रेयी को दो से तीन होने का एहसास होता है और इससे उसे आनंद की एक अनुभूति भी होती है ।[59]

:: कस्तूरी कुण्डल बसै ::

विश्लेषणात्मक दृष्टिपात :

"कस्तूरी कुंड़ल बसै" मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा का प्रथम खण्ड़ है । उसका प्रथम संस्करण सन् 2002 में प्रकाशित हुआ था और सन् 2003 में उसकी पहली आवृत्ति भी प्रकाशित होती है जिससे मैत्रेयी पुष्पा की रचनाओं की पठनीयता प्रमाणित होती है । मैंने यह आत्मकथा सन् 2008 में खरीदी थी । अतः इधर दो-तीन वर्षों में उसकी और आवृतियाँभी कदाचित प्रकाशित हुयी हो इससे हम सहजतया अंदाजा लगा सकते हैं कि मैत्रेयी पुष्पा को पाठकों का विशाल वर्ग मिला है और उससे कई लेखकों की उस शिकायत को भी करारा जवाब मिला है कि इधर लोग साहित्य नहीं पढ़ते हैं । साहित्य में यदि गुणवत्ता हो वह यदि दमदार हो तो पाठक तो उसे अपने आप मिल जाते हैं । परंतु इस प्रकार के लेखन के लिए साहस और हिम्मत की जरूरत है "सुष्टु सुष्टु" तो सभी लिखते हैं पर कुछ ऐसा लिखना जिससे समाज के विभिन्न तबकोंस से तरह-तरह की हलचलें पैदा हों । जीवन के उजले पक्षों को लिखना अच्छा लगता है पर आत्मश्लाघा आत्मकथा के लिए घातक बीमारी है । आत्मकथाकार को चाहिए कि वह अपने जीवन के कालेपक्षों को भी उतनी ही बेबाकी से पाठकों के सामने रख सकें । उसके लिए अतिरिक्त नैतिक हिम्मत और हौंसले का होना निहायत जरूरी है । इस आत्मकथा को पढ़कर हिन्दी के प्रतिष्ठित लेखकने अपने "फ्रस्टेशन" की फुहड़ता में मैत्रेयी पुष्पा को "छिनाल" तक कहने का दुस्साहस दिखाया ।[60] इससे ही हम अंदाजा लगा सकते हैं कि इस रचना ने कितने लोगोमें कितने प्रकार की प्रतिक्रियाओं को जगाया होगा । इसे भी रचना की सफलता का एक निकष कहा जा सकता है ।

"कस्तूरी कुंड़ल बसै" के विभिन्न अध्यायों के शीर्षक को देखते हुए इस पर कबीर साहित्य की मुद्रा स्पष्टतः लक्षित होती है। अंग्रेजी की एक कहावत है – Man knows by the company he keeps अर्थात् अपनी मित्रमंडली से पहचाना जाता है। इसी बात को किंचित परिवर्तन के साथ कहा जा सकता है – "An author is known by the quotations he / she likes" अर्थात् लेखक किन-किन लोगों को उद्धत करता है, उससे उसका परिचय उसकी विचारधारा का परिचय भी प्राप्त होता है। जिस तरह कबीर ने अपने समय में सामाजिक, धार्मिक, ब्राह्य अनुष्ठानों के पाखंडों का पर्दाफाश किया था ठीक यही प्रवृत्ति हमें इस आत्मकथा में भी उपलब्ध होती है।

आत्मकथा के प्रांरभिक 40 - 50 पृष्ठों तक हमें कस्तूरी का आत्मसंघर्ष मिलता है। कस्तूरी के मन में ब्याह की कोई उत्सुकता नहीं है क्योंकि उसने सुन रखा था कि पति की मृत्यु के उपरांत स्त्री को सती बताया जाता है। उसे भी पति की चिता के सात जल जाना होता है अतः इसकी कल्पना मात्र से कस्तूरी के रोंगटे खड़े हो जाते है। परंतु न चाहते हुए पर भी घर की गरीबी के कारण कस्तूरी को विवाह करना पड़ता है। एक प्रकार से कस्तूरी को बेचा गया था ऐसा ही कह सकते है। दो - चार साल के वैवाहिक जीवन के उपरांत कस्तूरी का पति हीरालाल का निधन हो जाता है। निधन से पूर्व उसने कस्तूरी की झोली में एक बच्ची को डाल दिया है। वह बच्ची ही आगे चलकर "मैत्रेयी पुष्पा" के नाम से जानी जाती है। कस्तूरी को वैवाहिक जीवन का कोई अच्छा अनुभव नहीं होता। मैत्रेयी से पूर्व कस्तूरी को एक लड़का हुआ था और जिस दिन उस लड़के की मौत हुई थी उस समय ही कस्तूरी ने अपने पति को किसी दूसरी स्त्री के साथ "कुकर्म" करते हुए देख लिया था।[61] इसके कारण कस्तूरी पुरूष बिरादरी को "कुत्ते की जात" समझने लगती है। पुरूषों के प्रति उसके मन में कोई आकर्षण नही रहता और वह समग्र पुरूष जाति को ही मक्कार और धोखेबाज समझने लगती है। पति की मृत्यु के बाद भी कस्तूरी टूटती नहीं है। वह और विधवा स्त्रियों की भाँति स्वयं को दयनीय नहीं समझती, बल्कि बेचारगी को वह प्रयत्नपूर्वक अपनी जिंदगी से फेंक देती है। कुछ पंक्तियाँ स्मृति में कौंध रही है – "बेचारा" यह शब्द लब्ज़े हमदर्दी नहीं। गाली है गाली है। इसलिए नहीं बनूँगा बेचारा क्योंकि बेचारा बनना / टूटना हैं और मै ही अगर टूट गया तो कितने ही

टूट जाएगें बनने से पहले ।"[62] कस्तूरी भी बेचारगी की जिंदगी जीना नहीं चाहती । अतः पढ़ लिखकर वह आत्मनिर्भर होना चाहती है । इसमें कस्तूरी को अपने बूढ़े ससुर मेवाराम और गाँव के नंबरदार मुखिया का भी सहयोग प्राप्त होता है । मेवाराम तथा नंबरदार पुरानी पीढी के होते हुए भी नारीशिक्षा और नारी की आत्म निर्भरता के कायल है । यह आधुनिक युग, गांधीवाद का प्रभाव है । जब कि दूसरी और आज़ादी के बाद काग्रेसी शासन में उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री के नारी विषयक विचार नितांत प्रतिगामी दिखते है । मुख्यमंत्रीजी नारी के कार्यक्षेत्र को घर की चार दिवारी ही समझते थे और पढ़-लिखकर स्त्रियों का आगे आना, उनका आत्म-निर्भर होना, उनको फूटी आँखों नहीं सुहाता था ।[63]

कस्तूरी मंगल योजना में काम करती है और ग्रामीण विधवा महिलाओं को संगठित आगे बढ़ने की मुहीम चलाती है । अपनी नौकरी के कारण कस्तूरी किसी एक जगह पर स्थिर होकर रह नहीं सकती थी । फलतः अपनी बेटी मैत्रेयी को पढ़ाने के लिए उसे अलग अलग जगहों पर रखना पड़ता है । फलतः बड़ी छोटी उम्र में मैत्रेयी को भी कई ऐसे अनुभव होते हैं जो उसकी उम्र की लड़की को प्रायः नहीं होते । पढ़ाई के लिए कस्तूरी अपनी बेटी को एक ग्राम्य-संयोजिका के यहाँ रखती है । वह मैत्रेयी से न केवल अपने घर का काम करवाती थी । बल्कि उसके बेटा भी उस पर बुरी नजर डालता है और उसे बेइज्जत करने की कोशिश करते है वहाँ एक बूढ़ा उसे बलात्कृत करने की कोशिश करता है । तब कस्तूरी उल्टे मैत्रेयी पर ही बरस पड़ती है कि स्त्रीजात को इन सब चीजों से निबटने की आदत होनी चाहिए । उसका डटकर मुकाबला करना चाहिए न कि इधर उधर भागकर खडे होना चाहिए । कस्तूरी के सामने एक ही लक्ष्य है कि लड़की पढ़-लिखकर अपने पाँवों पर खड़ी हो जाए । अतः हाईस्कूल के उपरांत मैत्रेयी को महिला-विकास में नौकरी भी मिल जाती है । परंतु इस प्रकार की नौकरी में हमेशा उपरी अधिकारियों की चापलूसी और चाटुकारी करनी पड़ती है जो मैत्रेयी को पसंद नहीं है । अतः वह उस नौकरी को छोड़कर मोठ के इंटर कोलेज में पढ़ने जाती है ।

"जहँ-जहँ चरन पड़ें संतन के, तहँ-तहँ बँटा-ढ़ार" उक्ति के अनुसार मैत्रेयी पुष्पा को यहाँ भी कुछ बुरे अनुभव से गुजरना पड़ता है । यहाँ कोलेज का प्रिसिंपल ही विलन बनकर आता है । इसे हमारी शिक्षा-व्यवस्था और सिस्टम की विडंबना ही समझना चाहिए

की जिन बातों को लेकर प्रिंसिपाल की प्रताड़ना होनी चाहिए, निंदा और भर्त्सना होनी चाहिए, उसके स्थान पर अनुशासन के प्रश्नों को उठाते हुए मैत्रेयी को ही कोलेज से रेस्टिकेट करने की बात आती है। यहाँ हमें कस्तूरी के जीवन के कुछ अंतः विरोधी का भी परिचय मिलता है। नारियों के खिलाफ अत्याचार और अन्याय का झंडा फहरानेवाली कस्तूरी यहाँ अपनी ही पुत्री को न्याय दिलाने में कमजोर साबित होती है क्योंकि प्रिंसिपल महोदय की क्षमा याचना करके वह किसी तरह उस समस्या को सुलझाना चाहती है।[64] कथाचित यह इसलिए भी है कि वह चाहती है कि मैत्रेयी कुछ पढ़-लिखकर आगे बढ़े और अपने पैरो पर खड़ी होने लायक स्थिति में पहुँच जाएँ। कस्तूरी का लक्ष्य है कि बेटी ऊचाइयों और बुलंदीयों को छुए फिर भले ही उसके लिए कहीं समझौते करने पड़े।

मोठ के बाद मैत्रेयी की स्नातक और अनुस्नातक की पढ़ाई झाँसी के कोलेज में होती है। यहाँ पर मैत्रेयी हिंदी साहित्य तथा संस्कृत साहित्य से विशेष परिचित होती है। साथ ही साथ उसका अंग्रेजी पर भी उसका प्रभुत्व होता है। जिसका हिंदी – संस्कृत के छात्रों में प्रायः अभाव सा दिखता है। जो शहराती लड़कियाँ मैत्रेयी को गँवई, गँवारू समझती थी वे भी उसकी अंग्रेजी की वाक्पटुता से अभिभूत होती है। उसके कारण कुछ लड़कों से भी उसकी घनिष्टता बढ़ती है। संस्कृत एसोशिएशन की वे सेक्रेटरी होती है और छात्रसंघ के चुनाव में भी अपने सहपाठी "मदन मानव" का प्रचार करती है जिसे उस समय के वातावरण को देखते हुए एक प्रगतिशील कदम समझना चाहिए।[65] क्यूँकि प्रायः कोलेज छात्राएँ इन सब बातों से छात्र राजनीति से दूर रहती है, वहाँ मैत्रेयी की सक्रियता उसके भविष्यत प्रगतिवादी विचारधारा को रेखांकित करती है।

मैत्रेयी के अध्ययनकाल के कुछ प्रेम प्रसंग भी यहाँ वर्णित हुए है। मैत्रेयी जब अलीगढ़ में पढ़ती थी तब एक चमार लड़के से उसकी मित्रता हुई थी। कोलेज में आने के उपरांत राघव नामक एक लड़का मैत्रेयी के पीछे दिवाना था। मैत्रेयी को कविता लिखने के लिए प्रेरित करनेवाला वही था, जो बाद में उसके प्रेम के कारण कुछ विक्षिप्त सा भी हो गया था। इन दिनों में वह जादुनाथ के बाड़े की स्त्रियों पर एक व्यंग्य कविता भी लिखती है, जिसके कारण उसके जादुनाथ के बाड़े से भी निकाला जाता है। तब भी

कस्तूरी मैत्रेयी पर बुरी तरह से नाराज होती है ।[66] जादूनाथ के बाड़े से निकाले जाने पर मैत्रेयी को एक गंदी बस्ती में रहना पड़ता है । यहाँ पर मैत्रेयी "रेल्वे कोलोनी" को लेखनी की ताकात का भी पता चलता है । एक और बात यहाँ ध्यात्व रहेंगी कि मैत्रेयी के ये प्रेमसंबध केवल भावनात्मक स्तर के है उसमें शारीरिकता या इंद्रियता नहीं है । इसके पीछे कुछ परिस्थितियाँ भी है । शायद नंदकिशोर के साथ मैत्रेयी के शारीरिक संबध भी स्थापित हो सकते थे । परंतु गौरा और कस्तूरी की सजगता से वह हादसा होते होते रह जाता है ।[67] यदि ऐसा होता तो शायद मैत्रेयी का जीवन कुछ दूसरे प्रकार का होता ।

कस्तूरी महिला मंगल योजना में अधिकारी के पद पर कार्य करती थी । उसकी मातहत में गौरा नामक एक ग्रामसेविका है । गौरा भी विधवा थी । आत्मकथा में कस्तूरी और गौरा के समलैंगिक संबंधो के संकेत भी मिलते हैं ।[68] उन दोनों की अंतरंगता हंमेशा बनी रहती है । जीवन के अनेक उतार-चढ़ावों में गौरा कस्तूरी के साथ रहती है । यहाँ तक कि आत्मकथा के अंत में जहाँ कस्तूरी के विभाग को खत्म करने की बात आई है । वहाँ पर भी कस्तूरी जो आंदोलन करती है । उसमें भी गौरा उसके साथ रहती है ।

वैसे कस्तूरी का बस चलता तो मैत्रेयी के विवाह के लिए वह कभी नहीं सोचती क्योंकि संसार का यह कोमल और संवेदनापूर्ण पक्ष मानो उसके लिए सूख ही गया है । मैत्रेयी यदि पढ़-लिखकर अपने पैरों पर खड़ी हो जाती तो, सरकार में किसी उच्च अधिकारी पद पर आसीन हो जाती तो उसकी प्रसन्नता का कोई ठीकाना न रहता परंतु मैत्रेयी तो पूरी तरह डूब कर संसार को भोगना चाहती है । उसमें एक सुखपूर्ण दांपत्यजीवन जीने की भरपूर ख्वाईश है । किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है, उसकी नारी चेतना कुंद हो गई है, या कि परंपरावादी या रूढीवादी अशिक्षित अंधविश्वासी, धार्मिक, ढ़कोसलों में अशिक्षित रची पची रहनेवाली महिलाओं जैसी है । वह विवाह करना चाहती है परंतु पुरूष को पति या स्वामी के रूप में नहीं एक साथी और दोस्त के रूप में पाना चाहती है । बेटी के विचारों से परिचित कस्तूरी भी मैत्रेयी का विवाह करना चाहती हैं परंतु अपनी शर्तो पर । वह दान-दहेज के बिल्कुल खिलाफ है । बिना दान-दहेज के केवल मैत्रेयी की शैक्षिक योग्यता को ध्यान में रखकर यदि कोई लड़का विवाह के लिए तैयार हो जाता है तो कस्तूरी को कोई एतराज नहीं । अढू के नगलावाला अयोध्या प्रसाद सिंह

इंजीनियर है और मैत्रेयी को चाहता भी है, मैत्रेयी भी उसे पसंद करती है। परंतु दहेज के कारण वह शादी नहीं हो पाती।

अंततः कस्तूरी की ननद विद्याबुआ के प्रयत्नों से कस्तूरी को मैत्रेयी के लिए एक डॉक्टर लड़का मिल जाता है। वह बिना दहेज के मैत्रेयी की शैक्षिक योग्यता के आधार पर विवाह के लिए तैयार हो जाता है।[69] इस समय मैत्रेयी झाँसी में रहकर पढ़ती थी। जादूनाथ के बाड़े से निकालेजानेवाली घटना मैत्रेयी के छात्रसंघ के चुनाव में योगदान की घटना, मदन मानव की मैत्री, मैत्री के पीछे पगलयाएँ राघव की कथा, ये सब घटनाएँ, पूर्वदीप्ती शैली में बतायी गई है।[70] निशिखरे की आत्महत्या वाली घटना भी यहाँ आती है। निशिखरे कोलेज कन्या है पर उसके माँ-बाप जबरदस्ती उसे एक कुपात्र के गले मढ़ देना चाहते है तब निशिखरे आत्महत्या कर लेती है।[71] यहाँ पर शकुन की त्रासदी भी आई है। शकुन और उसके पति दोनों मैत्रेयी के गाँव के है। शकुन का पति अपाहिज है वह बस के कर्मचारियों तथा मालिकोकों अपने घर ठहराने की व्यवस्था करता है और वे लोग न जाने कहाँ - कहाँ से लड़कियों को लेकर आते है। कई लड़कियाँ वहाँ बलात्कृत होती रहती है। शकुन का पति शकुन से भी "धंधा" करवाता है। अतः एक दिन शकुन भाग जाती है। मैत्रेयी को लगता है कि निशिखरे से अधिक साहसी वो शकुन निकली।

मैत्रेयी और डॉक्टर का विवाह होता है। विवाह के समय भी कस्तूरी के स्वभाव के कारण कई अडचने आती है, परंतु किसी तरह से विवाह संपन्न होता है। विवाह के समय के मांगलिक प्रसंग, अनुष्ठान, मंगल-गीत, खेल के गीत, गालीगती आदि का बड़ा सजीववर्णन मैत्रेयी ने किया है। विवाह के उपरांत मैत्रेयी जब ससुराल के लिए बिदा होती है। तब भी कस्तूरी और माँओं की तरह शिक्षा वचन देने के स्थान पर उसे रीति-रिवाजों के नाम पर समझौता न करने की सलाह देती है।

मैत्रेयी के खुले व्यवहार के कारण ससुराल में उसे पास-पड़ोस की औरतों के व्यंग्यबाण सुनने पड़ते हैं। मैत्रैयी ने यहाँ बेबाक ढंग से डॉक्टर के साथ के उनके प्रथम संयोग वर्णन किया है। शारीरिक संबध स्थापित करने में डॉक्टर जब असफल रहते है तो मैत्रेयी खुलकर सामने आती है। यहाँ विपरीत रति का भी वर्णन है। मैत्रेयी के इस

खुलेपन के कारण उसके पूर्वचरित्र को लेकर भी डॉक्टर भी कुछ-कुछ सशंकित रहने लगते है। सामाजिक प्रथाओं का विरोध करनेवाली मैत्रेयी जब मायके जाते समय जेवरों को साथ लेकर जाने की बात करती है तो उसे लेकर कुछ विवाद भी होता है। वस्तुतः जेवरों को अपने पास रखने की सलाह कस्तूरी की थी, परंतु अततः वही मैत्रेयी को समझाती है कि वह इस प्रकार की कोई जिद न करे।[72]

मैत्रेयी के मायके आने पर डॉक्टर कई दिनों तक उसे लिवाने नहीं आते, अंततः अपने एक कोलेज के मित्र की सलाह पर मैत्रेयी ही पहल करती है वह अपने पति को एक पत्र लिखती है। डॉक्टर उसे लिवाने आते है। तब कस्तूरी अपने दामाद को बहुत लाड़-प्यार करती है। यहाँ पर कस्तूरी की अभुक्त कामवासना के भी हमें दर्शन होते है। साधारण माँ जहाँ ऐसे अवसरों पर अपनी बेटी और दामाद के मिलन के लिए व्यवस्था कर देती है और उसके लिए प्रसन्न भी होती है, वहाँ कस्तूरी का व्यवहार कुछ असाधारण (Abnormal) सा लगता है। कस्तूरी और गौरा बेटी-दामाद पर पहरे बिठा देती है। और एक बार बेशर्म होकर जब वे दोनों शारीरिक मिलन का प्रयत्न करते हैं तब उनके उस व्यवहार में कस्तूरी को व्यभिचार के दर्शन होते है।[73]

मैत्रेयी चाहती थी की डॉक्टर उसे लिवाकर ले जाए, परंतु कस्तूरी उसके लिए राजी नहीं होती। अतः डॉक्टर को खाली हाथ ही लौटना पड़ता है। उसके बाद ज्ञात होता है कि मैत्रेयी गर्भवती होती है। कस्तूरी कि वह सुई अब पैरो तक पहुँच गई है। अतः डॉ. अपनी सास को अस्पताल में भर्ती करवाते है। वहाँ भी कस्तूरी को यह चिंता रहती है कि उसकी अनुपस्थिति में प्रदेश का मंत्री उसके विभाग को बंद करवा देगा। बल्कि अस्पताल में वह स्वयं को नजरबंद किया गया है, ऐसा सोचती है। मैत्रेयी एक पुत्री को जन्म देती है। कस्तूरी किसी तरह अस्पताल से निकलकर अपने विभाग को चालू रखने के आंदोलन में भी जान से जुट जाती है। कस्तूरी के कई सहयोगियों को फोड़ दिया जाता है और कस्तूरी; गोरा और दो एक अन्य ग्राम्य सेविकाओं को जेल में बंद करवा दिया जाता है। उन पर आरोप लगता है कि उनके बगलथैलों में हथगोले थे। वस्तुतःये हथगोले पुलिसवालों ने ही रख दिए थे और कस्तूरी तथा उनके साथियों पर गलत आरोप लगाये गए थे। तब डॉक्टर एक आज्ञांकित पुत्र की भूमिका अदा करते हुए

कस्तूरी को छुड़वाने लखनऊ भी जाते है। उनकी नौकरी भी दाव पर लगी हुई है। यहाँ तक कि कथा-कस्तूरी कुंडल बसै खण्ड़-1 में उपन्यसत् हुई है।[74]

कस्तूरी दहेजप्रथा को समाज का दूषण समझती है। मैत्रेयी के संबध के लिए जब वह इधर उधर हाथ मारती है तो उस समाज की सोच को वह लानत भेजती है। एक स्थान पर उसके अंतद्वंद्व को लेखिका ने स्पष्ट किया है। – "यथा कस्तूरी की छाती पर से साँप गुजर गया। साँस आए न जाए यह है, उनका समाज। इस समाज में वे मनुष्य तो क्या औरत भी नहीं है; रांड है, विधवा, बस! ऊपर से निपूती, साख के लिए कोई रूख तो क्या, कोपल तक नहीं। पुरूषों जैसे काम करने से पुरूष जैसी नहीं मान ली जाती स्त्री सामाजिक कामों के चलते उसे किसी पुरूष की जरूरत होती है, भले वो पाँच साल या दो साल का हो। पति और बेटा कहाँ से लाएगी कस्तूरी? काँपते कलेजे को पुरूष के आंतक ने कँस लिया.....दर्द ने धीरे-धीरे उद्यता का रूप ले लिया – "मैं स्त्री नहीं, माँ नहीं, रांड हूँ....छोड़ो उनकी बातें। बेवकूफ साले खुद में तो कोई खासियत है नहीं, लड़के को पढ़ा लिया, बस अत्तेखाँ के बाप बन गये, हम भी चित्त न कर दे तो बनिया से जाइदाँ नहीं। आज बेटा पाठक, तू डाल तो हम पात – पात.....यह मामला परिवार का नहीं। निष्ठुर और क्रूर समाज का है, जहाँ स्वार्थ तो घुल-मिल सकते हैं। लाचारियाँ और कमजोरियाँ नहीं।"[75]

आजादी से लोगों को बहुत सी आशाएँ थी। लोग बाग सोचते थे कि आज़ादी मिलने पर हमारी सारी समस्याओं का अंत हो जाएगा। नंबरदार कहा करते थे, देश आज़ाद हो जाएगा तो रामराज आ जाएगा, पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। आजादी महज Transfer of Power होकर रह गई। पहले अंग्रेज लोग देश को छूरी-काँटे से खाते थे अब ये देशी खानेवाले उसे अचार और चटनी के साथ खा रहे हैं।[76] बकौल लेखिका के शिवामौरूसीदारी के पट्टे के कुछ न बदला। बेचने वाला वही रहा खरीदनेवाला वही रहा। बिकनेवाली चीजों में गाय-बैल-भैंस, जेवर, अनाज और लड़कियाँ रही।[77] आज़ादी के बाद रीति रिवाज के नाम पर होनेवाले खर्चो में कटौती तो नहीं हुई बल्कि बढ़ौती ही होती गयी है। यथा "बड़े गृहस्थवाले किसानों की बेटियों – बहनों की जन्मपत्रियाँ पड़ितोंने

हथियाँ ली नाईयों के जरिए शहर के रईसो के काने – बूचे, पागल – बावरे, लूले – लगड़े बेटो का पता लगाकर ब्याह साधे गए नाड़ियाँ और गुण मिलाकर "शुभ" करार दिए गए। कई पुरोहित इस चक्कर मे माला-माल हुए। खेल खरीदकर किसानों की श्रेणी में आ गए। नाईयों की माली हालत सुधर गई। ब्याह हुए कि कामगारों की बक्षिस ही उनकी जीविका का अच्छा साधन बन गई।[78]

आत्मकथा के अंत भाग में जहाँ कस्तूरी के महिला मंगल के ऊपर अस्तित्व संकट के बादल गहराने लगते है तब कस्तूरी का आक्रोश भड़क उठता है। गांधी और नेहरू के आदर्शो पर चलनेवाली कस्तूरी हिंसा की भाषा में सोचने लगती है क्योंकि प्रदेश का मुख्यमंत्री महिलाओं की उन्नति को नहीं चाहता। उसकी सोच वही पुरानी है। आज़ादी के संघर्ष के दौरान भले नेताओंने महिलाओ से कंधे से कंधा मिलाकर चलने को कहा होगा। अब अपना स्वार्थ संध जाने पर उनका कहना है कि स्त्री का स्थान तो चार दीवारी के अंदर है। चूल्हा - चौका ही उसकी दुनिया है। इसे एक विडंबना ही समझना चाहिए कि भारत जब पराधीन था तब लोगों के विचार स्वतंत्र थे। शरीर गुलाम था आत्मा स्वतंत्र परंतु आज़ादी के बाद पूरा परिदृश्य ही बदल गया। अब लोग वैसे तो आज़ाद हो गए पर उनके दिमाग वही रहे गुलाम के गुलाम। उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री उसकी जीतीजागती मिशाल है तभी तो एक स्थान पर कस्तूरी अपने दामाद से कहती है – "दामाद कुछ हथगोलो का इंतजाम कर सकेंगे? .....हमारे पास बंदूक नहीं, पिस्तौल नहीं, और यह लाठियों से लड़ने का ज़माना नहीं।"[79] अहिंसा और धर्म के संदर्भ में भी कस्तूरी के विचारों में परिवर्तन आता है। एक स्थान पर वह सोचती है "हम तो इतना समझते हैं कि आदमी न मांसाहारी जानवर की तरह हिंसक है और न पत्ती खानेवाली बकरी की तरह अहिंसह। समय ही उस पर मरने – मारनेवाली धार धरता है। ऐसा न होता तो गाँधीजी कहते कि वे कायरता के मुकाबले हिंसा को चुनेगें। कायर आदमी से बहादुर ही नफरत करते है और बहादुर किसी से डरते नहीं।[80] इसी रौं में वह अपनी बेटी मैत्रेयी से कहती है – "लाली सबसे बड़ी बात तो यह है कि अपने हिसाब से आदमी रिवाजों को मानता है, उससे बात नहीं बनती तो धर्मशास्त्र का सहारा लेता है वहाँ भी

विश्वास नहीं जमता तो गुरू पैगम्बर खोजता है और जब कही पेश नही जाती तो अपनी अंतरात्मा ही खगालता है, जो उसका आखिरी आसरा है। तू मुझे किसी से न जोड़। मैंने जो सवाल तेरे सामने धरा है, वह मेरी आत्मा की पुकार है समझ लें।[81]

इस तरह "कस्तूरी कुंडल बसै" कस्तूरी और मैत्रेयी की आत्मकथा तो है ही साथ में एक ऐसा दस्तावेज भी है, जिसमें स्वाधीनता पूर्व से लेकर स्वाधीनता बाद के 40 – 50 वर्षों के सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक जीवन और उसमें आनेवाले परिवर्तनों को उकेरा गया है। यह भी संकेतित हुआ है कि स्वाधीनता के बाद तरक्की पसंद ख्याल कैसे आहिस्ता-आहिस्ता कमजोर पड़ते गए हैं। और किस तरह फिर से कट्टरतावादी, रूढ़िवादी ताकातों ने समाज को अपने शिकंजे में घेर लिया है। इस प्रकार "कस्तूरी कुंडल बसै" को हम आत्मकथा मूलक उपन्यास भी कह सकते है क्योंकि मैत्रेयी ने पूरी टेक्निक उपन्यासों से ली है। यदि इसे आत्मकथा न घोषित किया जाता और मैत्रेयी अपने स्थान पर कोई कल्पित नाम रखती तो ये एक अच्छा खासा उपन्यास भी हो सकता था।

"कस्तूरी कुंडल बसै, मैत्रेयी की आत्मकथाओं का प्रथम खण्ड़ है। डॉ. गोपालराय इसे आत्मकथा से ज्यादा जीवनी और आत्मकथात्मक उपन्यास मानते हैं।[82] रायसाहब उसे जीवनी इस अर्थ में मानते है कि उसमें लेखिका मैत्रेयी की कथा के साथ-साथ उसकी माँ कस्तूरी के जीवन संघर्ष को भी रूपायित किया गया है। किन्तु यह तो स्वाभाविक है कोई भी आत्मकथाकार जब आत्मकथा लिखने का प्रारंभ करता है तो उसमें पृष्ठभूमि के रूप में उसके पूर्वजों और कुल की वंश - परम्परा अपने आप आ जाती है। हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा "क्या भूलूँ क्या याद करुँ" मैं भी बच्चनजी ने अपनी कुल परम्परा का विस्तृत विवेचन किया है। हाँ इतना हम कह सकते है कि यह आत्मकथा उपन्यास के शिल्पकौशल शिल्प संरचना और भाषिक रचाव को लेकर आई है। डॉ. रोहिणी अग्रवाल सत्य ही कहती है - "कस्तूरी कुंडल बसै में उस मानवी सत्ता की गाथा है जिसमें मानव की तरह एक तरफ अदम्य पुरूषार्थ कौशल, शक्ति, संकल्प और द्रढ़ता का समावेश है तो दूसरी तरफ मानवोचित्त, दुर्बलताए और कमियाँ भी पूरी तरह से उभरकर आई है"[83]

डॉ. राधारमणवैद्य "कस्तूरी कुंडल बसै" के संदर्भ में अपनी टिप्पणी देते हैं – "कस्तूरी कुंडल बसै" में मैत्रेयी ने जिस तरह अपने कष्टप्रद कठिन जीवन के कटु सत्यो को रख खोला है, उससे अनायास सभ्यजनों की कलई और प्रपंच खुले हैं । धर्म और नैतिकता के ठेकेदारों को औरत के सच और उसके बोलने से डर लगता है । यह एक उत्कृष्ट कृति है और इसे स्त्री साहित्या लोचना समालोचना की तरह पढ़ना चाहिए ।"[84] क्षमाशर्मा ने तो प्रस्तुत कृति के समीक्षात्मकलेख का शीर्षक ही रखा है "किंवदतीयाँ नहीं है कस्तूरीयाँ" अपने वातानुकूलित सुविधा भोगी अंधेरे बंध कमरो में रहनेवाले लोगों को इसमें अतिशयोक्ति नजर आ सकती है, परंतु जिन्होने इस ग्रामीण जीवन को देखा – झेला और भोगा है वे कस्तूरी के जीवन को किंवदती के रूप में नहीं ले सकते । कस्तूरी की जवामर्दी के संदर्भ में क्षमाशर्मा लिखती हैं – "लेकिन कस्तूरी बिकने के बाद बेचारी नहीं बनी है । विधवा हो जाने पर भी किसी के सामने गिड़गिड़ाई नहीं है । लड़की के जन्म के उपरांत अपने भविष्य को सँवारने का कौन-सा सपना उसके पास है – शिक्षा का । चाहे जितना पैदल चलना पड़े, लोग चाहे जितनी नाक - भो सिकोड़े कस्तूरी के पाँव थमे नहीं है । वह खुद ही नही पढ़ती, गाँव-गाँव में औरतों को शिक्षित करने छोटा परिवार रखने और शोषण को न सहने की अलख जगाती है ।[85]

क्षमाशर्मा ने कस्तूरी का अपने दामाद के प्रति जो मोह या आकर्षण है उसका भी यथार्थ विश्लेषण किया है – "और मैत्रेयी इस डाह से मरी जा रही है कि माँ उसके पति को घूर क्यों रही है? पति माँ को पत्नी के होते हुए भी घुमा रहा है कि माँ दामाद के कपड़े क्यों धो रही है । क्या इसलिए की माँ ने अपनी स्वाभाविक ईच्छाओंको हंमेशा नैतिकता, गांधीवाद, आज़ादीकी लड़ाई, स्त्रियों का उत्थान आदि सुनहरे रेपरों में छिपाकर मारा है । इसलिए जैसे ही कोई पुरूष नजदीक आया है, वह उसे उन नज़रो से देख रही है ।[86]

डॉ. रोहिणी अग्रवालन "कस्तूरी कुंडल बसै" पर लिखे समीक्षात्मक लेख का शीर्षक रखा है – "किले को तोड़ती औरतें" । प्रस्तुत आलेख में रोहिणीजी लिखती है - "कन्फार्मिस्ट" स्त्रियों के लिए उसके (कस्तूरी) पास गुलाबी सपनों की अनगिनत पोटलियाँ भी है, जिन्हें अबोध बालिका लाली (मैत्रेयी) और अति अबोध वृद्धाएँ (कलावती

काकी, खेरापतिन दादी) आदि न समझ पाने के कारण गीतों – रिवाजों वृत - कर्मकांडो में खोलती फैलाती चलती हैं। विद्रोहणी होते हुए भी कस्तूरी के खून से सर्जी मैत्रेयी की तासीर अलग है – सबके साथ जुड़कर आत्म सार्थकता की तलाश। आर्थिक आत्मर्निभरता की आत्म मुग्ध कर देनेवाली ऊँचाईयॉ की अपेक्षा "लोकतत्व" उसे अधिक छूता-बाँधता है। अभिजात्य के कृत्रिम प्रदर्शन की अपेक्षा मानवी-मूल्यों की जिंदा मिशालों की तरह जीनेवालों दलितों और अवर्णो, मजदूरों और किसानों के श्रम और निष्ठा के प्रति वह अधिक आस्थावान है। पूर्णता एवम् आत्मविश्वास का दावा करनेवाली विवाह संस्था के आकर्षण में बधं कर विवाह करती है। किन्तु उसकी असलियत सामने आते ही पतिनामक जीवधारी के हाथ उसकी औकात थमाने में देर नहीं लगाती। लेकिन शकुन के प्रसंग को छोड़ दें तो मैत्रेयी की सारी चेतना और विद्रोह प्रेम एवम् देश संबंधों के ईदर्गिद घूमते हैं। बचपन से ही "नैतिकपरिवेश" और सही "Character" न मिल पाने को कारण उसे पुरुषों से परहेज नही, क्योंकि उसकी नज़र में थोपी गई नैतिक वर्जनाएँ मानवीय संबंधों एवम् मूल्यों के विस्तार काटती-छाटती चलती है। एक के बाद एक बाज-बहादुर, शिवदयाल, राघव, नंदकिशोर जैसे लड़कों के साथ प्रेमसंबध और अपराधबोध रहित शारीरिक आशक्ति उसे "मित्रो मरजानी" की "मित्रो के समीप ले जाती है। जिसके लिए देह और दैहिक भूख छिपाने की नहीं, स्वीकारने और आनंदित होने की चीज है।"[87]

सुहागरातवाले प्रसंग में विपरीत रति का जो संदर्भ आया है उसके संदर्भ में डॉ. रोहिणी अग्रवाल शंका व्यक्त करती है – "कि कहीं लेखिका ने मैत्रेयी – लीलाप्रसंग इस "आधुनिक" जरूरत को पूरा करने के लिए (Boldness)बताने के लिए तो नहीं कल्पित / संयोजन किए? विद्रोह और Boldness के घाल मेल से तैयार "बिकाऊ स्त्री – विमर्श" जिसके इस ओर परम्पराओं को तोड़ने वर्ष और खुल्लम-खुल्ला वर्णित फल चखने का आनंद है तो दूसरी ओर "उन अतरंग और लगभग अनछूअे अकथनीय प्रसंगों" "अन्वेषण और स्वीकृति" के सहारे साहसिक तत्वोंसे भरपूर (क्या इसीलिए श्रेष्ठ मानी गई?) मराठी और उर्दू की आत्मकथाओं की पाँत मे बैठने का गौरव भी। यों आत्मकथा की तथ्य परखता और प्रमाणिकता पर ऊँगली उठाना ठीक नहीं। न ही स्त्री की उदाम कामेच्छा

को गलत ठहराने का पोंगापंथी हठ । लेकिन बिना किसी सामाजिक सरोकार और सुस्पष्ट उद्देश्य के उनका वर्णन, और महिमा मंडन ही कहाँ तक उचित है ?[88]

यहाँ पर डॉ. रोहिणी अग्रवाल ने उक्त प्रसंग में निरूपित प्रणयप्रसंग को लेखिका द्वारा बोल्डनेस बताने का तरीका बताया है । हाँलाकि उन्होंने अपनी शंका रखी है । परंतु आत्मकथा में किसी लेखक या लेखिका के कथन की सत्यासत्यता पर विचार करना कहाँ तक उचित है । पुरूष लेखकों द्वारा किए गए स्वीकृति कथनों पर तो कभी इस प्रकार के प्रश्न उठाए नहीं गए । रोहिणीजी सामाजिक सरोकार और उद्देश्य की बात करती हैं तो इसे भी एक सामाजिक - सरोकार ही समझना चाहिए कि जहाँ एक स्त्री लेखिका अपने जीवन के अतिशय अतरंग प्रसंगो की चर्चा भी खुल्लम खुल्ला बिना नैतिक आडंबरों के कर सकी । यह स्वत्र्यंता यदि पुरुषों के पास है तो स्त्री – (स्त्री लेखिकाओं) के पास क्यों नहीं?

मैत्रेयी के सामाजिक सरोकार आत्म कथा में अनेक स्थानों पर दृष्टिगोचर होते हैं । पहली बेटी के होने पर मोहल्ले भर की औरतें जब बिसुरती है और मैत्रेयी को सुनाती है कि फला-फला को लड़के हुए हैं और यहाँ एक सतमासी लड़की जन्मी है, जो गंजी है तो मैत्रेयी न केवल उनको टोकती है, जली कटीबातें भी सुनाती है । मैत्रेयी को किसी प्रकार का शोक या अफसोस नही है । अपनी बेटी के जन्म को लेकर । अपनी प्रजाति से वह नफरत नहीं कर सकती । यहाँ पर हम अनुभव करते हैं कि मैत्रेयी में कहीं न कहीं कस्तूरी का आत्म-संघर्ष और विद्रोह उतर आया है ।

निष्कर्षतः क्हाँ जा सकता है कि "कस्तूरी कुंडल बसै" लीक से हटकर लिखी गई आत्मकथा है । जिसे कतिपय मराठी आत्मकथाओं और उर्दू लेखिकाओं की आत्मकथाओं और आत्मकथ्यों के समकक्ष रखीं जा सकती है । इसमें लेखिका ने कहीं भी आत्मदया का प्रयास नहीं किया है । अपने जीवन के ठोस यथार्थ को कलात्मक, निर्ममता और निसंगता के साथ प्रस्तुत कर दिया गया है, बिना यह परवाह किए कि पित्तृसत्तात्मक मनोवृत्तियों और मनोग्रंथियो से पीड़ित पुरुष लेखक या बुद्धिजीवी किस प्रकार की प्रतिक्रिया या बौखलाहट (?) प्रगट करेंगे ।

संदर्भसंकेत

1. दृष्टव्य : प्रारंभिक भूमिका : कस्तूरी कुंडल बसै – पृ. ५
2. दृष्टव्य : वही : पृ. ११
3. वही : पृ. २५

31. दृष्टव्य : पृ. १८१
32. कस्तूरी कुंडल बसै : पृ. १८३
33. दृष्टव्य : वही : पृ. १८७
34. दृष्टव्य : वही : पृ. १८८
35. दृष्टव्य : पृ. १९०
36. दृष्टव्य : पृ. १९२
37. दृष्टव्य : पृ. १९९
38. दृष्टव्य : वही : पृ. २११
39. दृष्टव्य : पृ. २२१
40. दृष्टव्य : पृ. २२०
41. दृष्टव्य : पृ. २३१
42. दृष्टव्य : पृ. २३९
43. दृष्टव्य :
44. दृष्टव्य : पृ. २४२
45. दृष्टव्य : पृ. २५०
46. वही : पृ. २६२
47. वही : पृ. २६८
48. दृष्टव्य : हिन्दी उपन्यास के विकास परम्परा में साठोत्तरी उपन्यास : डॉ. पारूकांत देसाई : पृ.
49. दृष्टव्य : कस्तुरी कुंडल बसै : पृ. २७०-२७१
50. दृष्टव्य : हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन : डॉ. मनीषा ठक्कर : पृ.
51. दृष्टव्य : कस्तुरी कुंडल बसै : पृ. २७५
52. वही : पृ. २८०
53. वही : पृ. २८७
54. दृष्टव्य : पृ. २९६
55. बिजली के फुल : डॉ. पारूकांत देसाई : पृ.

56. दृष्टव्य : कस्तुरी कुंडल बसै : पृ. २९९

57. दृष्टव्य : वही : पृ. ३०३

58 तुलनीय : औरत होने की सजा : अरविंद जैन तथा औरत के हक में : तस्लीमा नसरीन

59. दृष्टव्य : कस्तुरी कुंडल बसै : पृ. २३२

60. दृष्टव्य : हंस

61. दृष्टव्य : कस्तुरी कुंडल बसै : पृ. सं:

62. बिजली के फूल : डॉ. पारूकांत देसाई : पृ.:

63. दृष्टव्य : कस्तूरी कुंडल बसै : पृ. सं. २९५

64. दृष्टव्य : वही : पृ.

65. दृष्टव्य : वही : पृ. १८३

66. दृष्टव्य : वही : पृ. १४९

67. दृष्टव्य : वही : पृ.

68. दृष्टव्य : वही : पृ. १०५

69. दृष्टव्य : वही : पृ. १४९

70. दृष्टव्य : वही : पृ. १४९ से १९०

71. दृष्टव्य : वही : पृ. १८०

72. दृष्टव्य : वही : पृ. २१३ से २५९

73. दृष्टव्य : वही : पृ. २७०

74. दृष्टव्य : वही : पृ. २८७ से ३१९

75. कस्तूरी कुंडल बसै : पृ. ७२

76. दृष्टव्य : हरिशंकर चरसाई : "वह जो आदमी है न" नामक निबंध : परसाई ग्रंथावली –

77. कस्तूरी कुंडल बसै : पृ. ११३

78. वही : कस्तूरी कुंडल बसै : पृ. ११३

79. वही : कस्तूरी कुंडल बसै : पृ. ३०२

80. वही : कस्तूरी कुंडल बसै : पृ. ३०३

81 वही : कस्तूरी कुंडल बसै : पृ. ३०३

82. दृष्टव्य : मैत्रेयी पुष्पा : तथ्य और सत्य : पृ. २०

83. वही : पृ. २०

84. वही : पृ. २०

85. किवदंतियाँ नहीं है कस्तूरियाँ : क्षमा शर्मा : उपरिवत : पृ. १७६

86. वही : पृ. १७७

87. किले को तोड़ती औरते : मैत्रेयी पुष्पा : तथ्य और सत्य : रोहिणी अग्रवाल : पृ. १७९-१८०

88. वही : पृ. १८०